चन्दामामा

अप्रैल १९७३

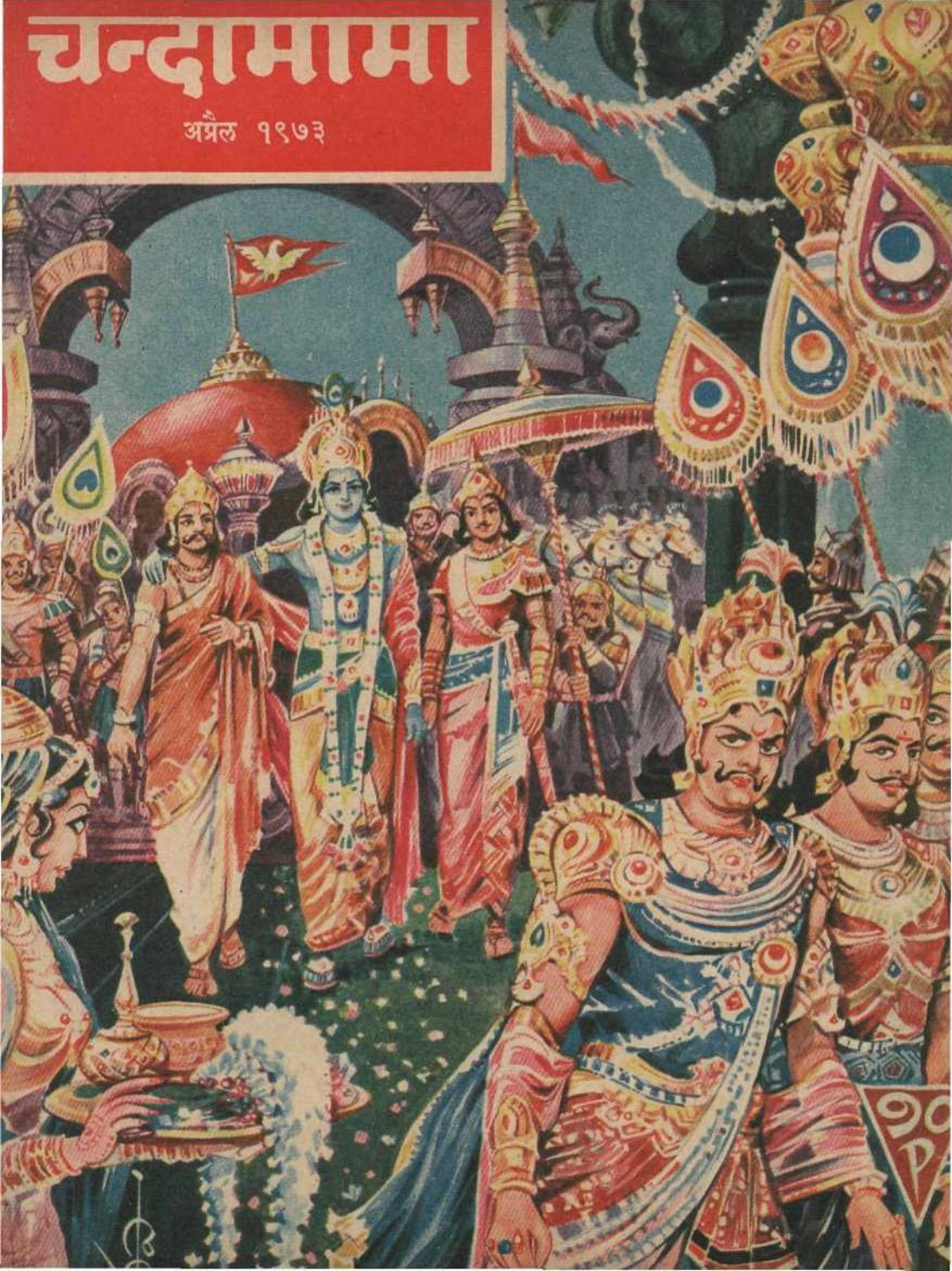

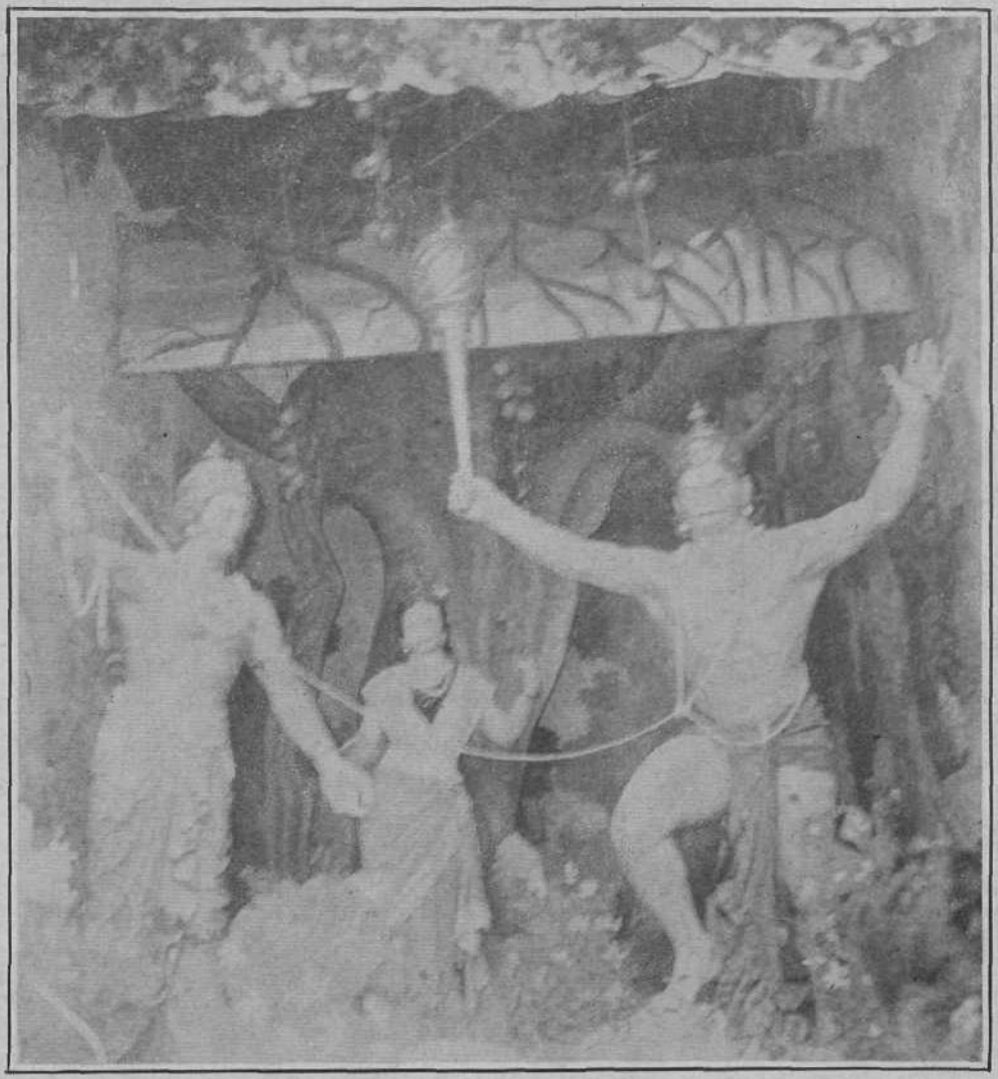

रसीली...प्यारी...मज़ेदार.

सिर्फ़ 30 पैसे

नयी पारले पॉपिन्स

फलों के स्वादवाली गोलियां

अनानास, नींबू, नारंगी, मोसंबी व रास्पबेरी—
पांच फलों के स्वादवाली १३ स्वादिष्ट गोलियां—
हरेक शानदार, कम कीमत के पैक में।

पॉपिन्सका स्वाद चखो, पांच फलों का मज़ा लो

everest/551b/PP hn

बताइये तो, किस बच्चे को उसकी मां इनक्रिमिन देती है?

आपका अंदाज सही है!

ड्राप्स—१ महीने से २ वर्ष के बच्चों के लिए
सिरप—१२ वर्ष तक के बच्चों के लिए

यह टानिक है महान!
बढ़ते बच्चों के लिए वरदान

इनक्रिमिन टानिक

अधिक खुराक को अधिक विकास में बदल देता है

डाक्टरों का विश्वास पात्र नाम Lederle
सायनामिड इंडिया लिमिटेड का एक विभाग।
● अमेरिकन सायनामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क

SISTA'S/INC/959 HIN

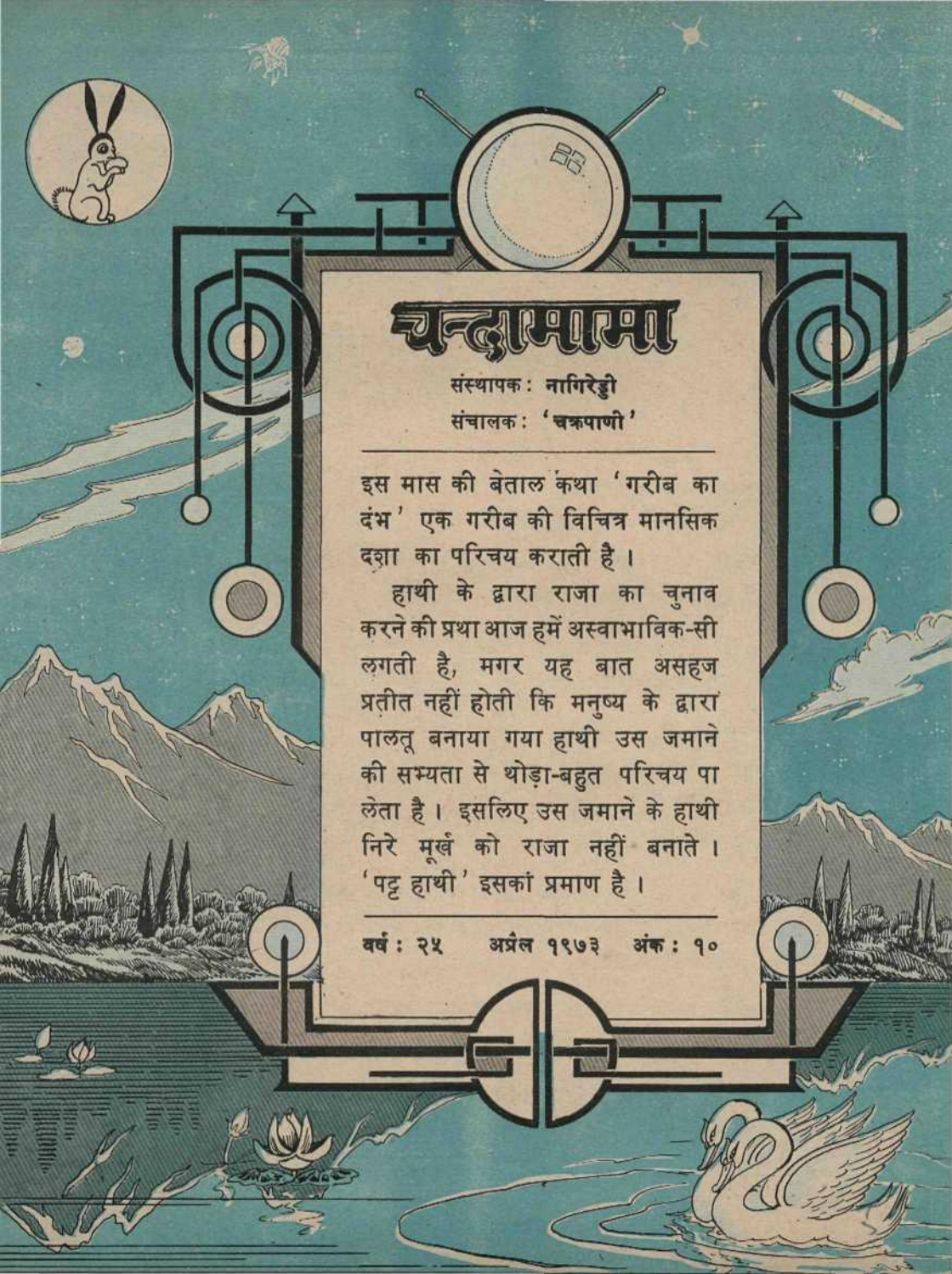

चन्दामामा

संस्थापक : नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'

इस मास की बेताल कथा 'गरीब का दंभ' एक गरीब की विचित्र मानसिक दशा का परिचय कराती है।

हाथी के द्वारा राजा का चुनाव करने की प्रथा आज हमें अस्वाभाविक-सी लगती है, मगर यह बात असहज प्रतीत नहीं होती कि मनुष्य के द्वारा पालतू बनाया गया हाथी उस जमाने की सभ्यता से थोड़ा-बहुत परिचय पा लेता है। इसलिए उस जमाने के हाथी निरे मूर्ख को राजा नहीं बनाते। 'पट्ट हाथी' इसका प्रमाण है।

वर्ष : २५ अप्रैल १९७३ अंक : १०

सुजनो न याति वैरम्
परहितनिरतो विनाशकालेपि,
छेदेपि चंदन तरुः
सुरभयति मुखम् कुठारस्य । ॥ १ ॥

[सत्पुरुष सदा दूसरों का हित चाहता है और अपने विनाश के समय भी वैर मोल नहीं लेता; इसी भांति चन्दन वृक्ष उसे काटनेवाली कुल्हाड़ी को भी गंध प्रदान करता है ।]

विसृज्य शूर्पव द्दोषान
गुणान् गृह्णंति साधवः;
दोषा नेव तु गृह्णंति
चालिनी वतु दुर्जनाः । ॥ २ ॥

[सूप जैसे थोथे को उड़ाकर सार को ग्रहण करती है, उसी भांति सज्जन लोग दोष को त्याग कर अच्छे को ग्रहण करते हैं । छलनी थोथे को ग्रहण कर जैसे सार को त्याग देती है वैसे ही दुर्जन लोग दोष को ही ग्रहण करते हैं ।]

खलः सर्षप मात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति,
आत्मनो बिल्व मात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति । ॥ ३ ॥

[दुष्ट व्यक्ति दूसरों में राई जैसी छोटी सी गलती को भी देखता है, मगर कैथे जैसे अपने बड़े दोषों को देख नहीं पाता ।]

सज्जन - दुर्जन

पट्ट हाथी

हजारों साल पहले की बात है। सिरिपुर राज्य पर अशोकवर्मा शासन करता था। उसके यहाँ हर साल युद्ध-विद्याओं में स्पर्धाएँ चलती थीं। उन विद्याओं में जो अपनी निपुणता दिखाते, उन्हें अपने दरबार में नियुक्त करता था। इस प्रकार राजा का आदर प्राप्त कर दरबार में प्रवेश करनेवालों में रविवर्मा एक था।

राजा अशोकवर्मा के कोई संतान न थी। अचानक उसकी मौत हो गयी, इसलिए वह यह बता नहीं पाया कि उसके बाद कौन उस राज्य का राजा बने। उसके दरबार में राजा बनने की योग्यता रखनेवाले अनेक व्यक्ति थे। मगर मंत्री सुमंत उनमें से किसी को भी राजा बनाने से डरता था। क्योंकि यदि उनमें से कोई एक राजा बना तो बाक़ी सब लोग उसके दुश्मन हो जायेंगे।

इसलिए मंत्री ने इस संबंध में राजगुरु की सलाह मांगी। राजगुरु ने बताया– "मंत्रीवर, यह समस्या हल करनेवाले तुम नहीं हो, सदा से हमारा यही रिवाज रहा है कि पट्ट हाथी जिसके गले में फूलमाला डालेगा, वही राजा बनेगा, इसलिए हम इस पुराने रिवाज़ का पालन करेंगे।"

यदि पट्ट हाथी होनेवाले राजा का चुनाव करेगा तो किसीको कोई आपत्ति न होगी। इसलिए मंत्री ने राजगुरु से एक शुभ मुहूर्त निर्णय करने का निवेदन किया। राजगुरु ने बताया कि दो सप्ताह बाद एक अच्छा मुहूर्त है। इस पर मंत्री ने ढिंढोरा पिटवाया कि अमुक दिन पट्ट हाथी जिसके गले में फूलमाला डालेगा, वह सिरिपुर राज्य का राजा बनेगा।

ढिंढोरा सुनकर एक व्यक्ति निराश हुआ तो दूसरे के मन में लोभ पैदा हुआ।

जानकी प्रसाद

निराश होनेवाला व्यक्ति रविवर्मा था। वह मृत राजा का कितना विश्वासपात्र था, यह बात दरबार का कोई व्यक्ति जानता न था। राजा अशोकवर्मा अपने जीवन काल में रविवर्मा के साथ ही गुप्त मंत्रणा किया करता था। रविवर्मा यह सोचकर अन्य दरबारियों के सामने वह एक छोटे कर्मचारी की भांति व्यवहार करता था कि बहुत समय से रहनेवाले दरबारी उसके साथ ईर्ष्या न करे। अशोकवर्मा को पहले ही यदि संदेह हो जाता कि वह जल्दी मर जायगा, वह मंत्री को आदेश देता कि उसके अनंतर रविवर्मा को ही राजा बनावे। इस बात में रविवर्मा को जरा भी संदेह न था, मगर पट्ट हाथी यह बात कैसे जाने। वह किसीके गले में माला डालेगा और वही राजा बन बैठेगा। यह सोचकर रविवर्मा दुखी हुआ।

मगर लोभ में पड़ा हुआ आदमी पट्ट हाथी को पालनेवाला महावत था। उसके मन में यह कुविचार पैदा हो गया कि किसी तरह से हाथी को यह आदत डाले कि वह उसके गले में माला डाल दे, तो राजा के चुनाव के दिन वह उसके गले में माला पहना देगा और इस तरह वह राजा बन सकता है। उसने सोचा कि राजा के चुनाव का समय अभी दो सप्ताह है, इस बीच हाथी को यह आदत डाली जा सकती है कि उसके गले में माला डाल दे। पट्ट हाथी की शाला से सट कर एक

महल था, उसकी चहार दीवारी से लगकर फूलों का एक बगीचा था। महावत उस दीवार को फांद कर बगीचे में पहुँचा, फूल तोड़ लाकर माला गूँथी। उसे हाथी की सूंड के आगे बढ़ा कर उसके द्वारा अपने गले में पहनाने लगा।

हाथी-खाने के बाज़ूवाला महल रविवर्मा का था। वह अपने बगीचे के फूल पूजा और सजावट के काम में लाता था। उसने देखा कि उसके बगीचे के फूल तोड़ लिये जाते हैं। इसलिए चोर का पता लगाने के ख्याल से वह एक दिन की रात को बगीचे में छिपा बैठा था।

महावत रात के वक़्त दीवार फांद कर बगीचे में आया, फूल तोड़ कर चला गया। रविवर्मा ने दीवार के पास आकर देखा कि महावत हाथी खाने में जाकर फूलों की माला गूँथ रहा है। वह यह देखने के लिए दीवार पर चढ़कर देखता रहा कि महावत उन मालाओं को क्या करनेवाला है।

मालाएँ गूँथने के बाद महावत हाथी के आगे बढ़ा कर उससे अपने गले में मालाएँ पहनवाने लगा। महावत की पीठ दीवार की ओर थी, इसलिए उसने रविवर्मा को देखा और घींकार करते उसकी ओर सूंड बढ़ायी। लेकिन महावत के पीछे मुड़ कर देखने के पहले ही रविवर्मा दीवार पर से उतर कर चला गया। महावत यह सोच कर डर गया कि उसका रहस्य किसी दूसरे पर खुल गया है। मगर वह यह समझ

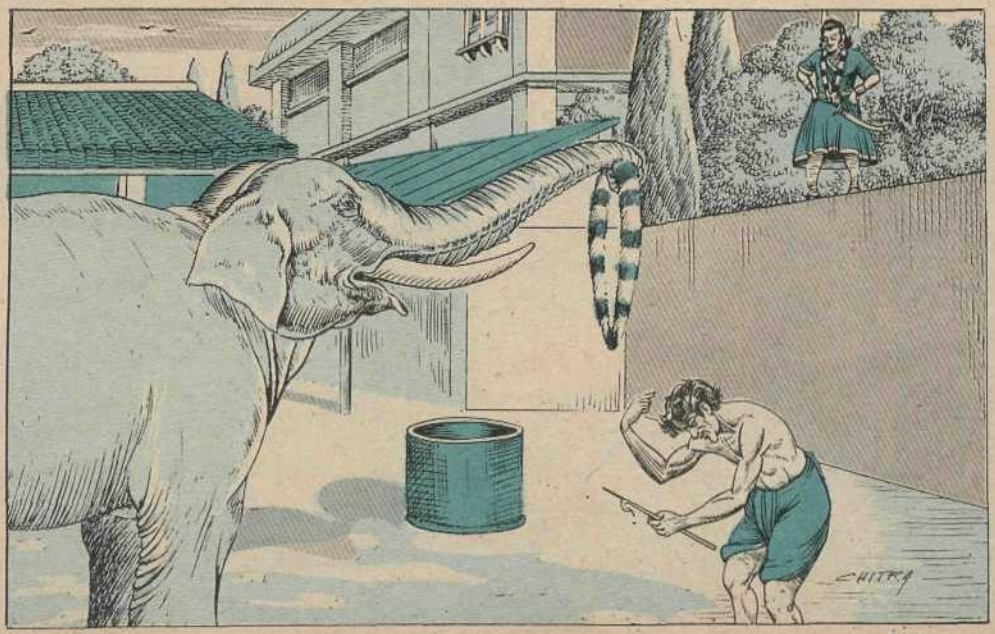

नहीं पाया कि देखनेवाला आदमी कौन है? इसके बाद वह हाथी द्वारा माला पहनाने का अभ्यास नहीं कर पाया।

इतने में राजा के चुनाव का दिन आ पहुँचा। हाथी की सूंड पर माला डाल महावत राजमहल में आया। किसी बहाने महावत हाथी के सामने आया, लेकिन हाथी ने उसके गले में माला नहीं डाली। ऐसा लगता था कि वह किसी का इंतज़ार कर रहा है। रविवर्मा के दिखाई देते ही हाथी ज़ोर से घींकार कर उठा और उसके कंठ में माला पहना दी। फिर क्या था, रविवर्मा का राज्याभिषेक हुआ।

इसके बाद एक दिन महावत ने एकांत में रविवर्मा के निकट जाकर पूछा– "महाराज, यदि आप मुझे क्षमा करें तो मैं आपसे कुछ निवेदन करना चाहता हूँ।"

"पूछो!" रविवर्मा ने उत्तर दिया।

"मैंने इस कुविचार से पट्ट हाथी के द्वारा अपने गले में माला पहनाने का अभ्यास कराया कि मैं ही राजा बनूं? लेकिन ऐन वक़्त पर हाथी ने मेरे गले में माला न डाल कर आपके कंठ में क्यों पहना दी?" महावत ने पूछा।

इस पर रविवर्मा ने हँस कर उत्तर दिया–"तुमने हाथी को कई विद्याएँ सिखायीं पर वे विद्याएँ तुम्हारे लिए नहीं। तुम माला पहन कर हाथी के सामने जाते हो तब तुम किसी दूसरे व्यक्ति के रूप में दिखाई देते हो। हाथी ने तुम्हारे द्वारा माला डालने की विद्या सीख ली, मगर उसके दिमाग में यह बात नहीं आयी कि तुम्हारे ही कंठ में माला पहनानी है। एक दिन रात को उसने तुम्हारे कंठ में माला पहनाते मुझे देख लिया। मेरे कंठ में सदा माला रहती है। इसलिए उसने सोचा कि मेरे लिए माला सहज है, अतः उसने अपनी सूंड में पड़ी माला को मेरी ओर बढ़ाया, उसी रात को मैंने तुम्हारे कुविचार को भांप लिया। उसी समय से हाथी के दिमाग में मेरे कंठ में माला डालने का विचार पैदा हुआ होगा।"

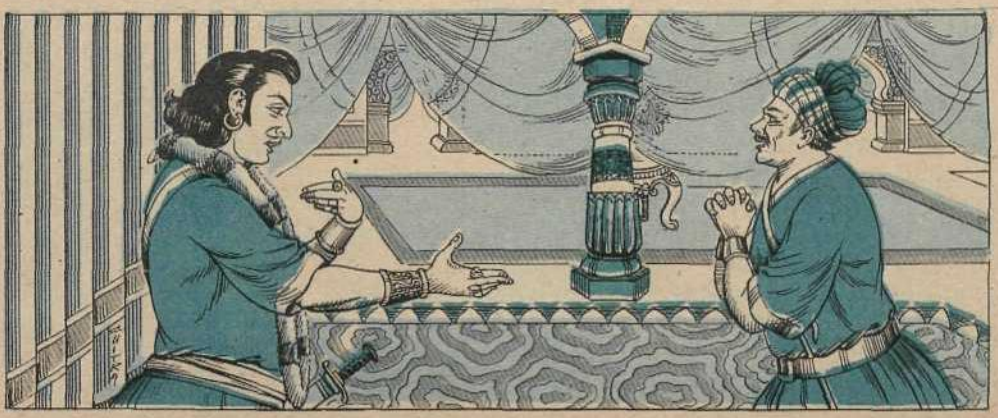

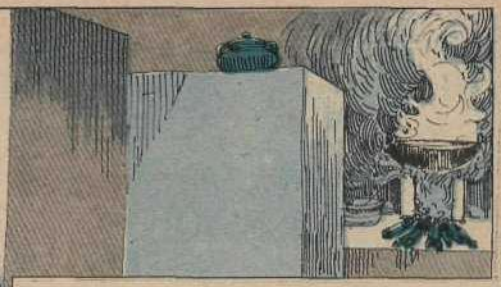

अंधेरे में दावत

ईराक के एक शहर में महम्मद और जरीना नामक एक गरीब दंपति था। जरीना गर्भवती थी। उसने हल्वा खाने की इच्छा प्रकट की।

महम्मद के तो रोटी के लाले पड़ते थे, ऐसी हालत में वह बेचारा हल्वा खरीद कर जरीना को कैसे खिला सकता था! लेकिन जवान पत्नी, तिसपर भी गर्भवती स्त्री! उसने कोई बड़ी इच्छा नहीं बतायी। कभी उसने कुछ पूछा न था, हल्वा मांगी, मगर कैसे खिलावे? यही सवाल था। फिर भी महम्मद ने अपनी बीबी को हल्वा खिलाने का निश्चय किया।

पिछले दिन पानी बरसा था। इसलिए व्यापारियों ने अपने माल को गली में धूप में सुखाया था। एक बाजार में चने का आटा सुखाया गया था। उसे देखते ही महम्मद जल्दी जल्दी घर दौड़ आया। अपने बदन पर तेल मलकर बाज़ार की ओर चल पड़ा। चलते-चलते वह चने के आटे के ढेर पर गिर पड़ा। उस पर लोटकर सारे बदन में आटा छिपका लिया, तब घर लौटकर सारे आटे को सूप में झाड़ दिया, फिर नहाया।

इसके थोड़ी देर बाद उसने सर पर पगड़ी बाँध ली, कपड़े पहन कर तेल की दूकान पर पहुँचा और पूछा–"कहो भाई, तेल का भाव कैसा?" यों पूछते तेल के डिब्बे पर झुक कर देखने लगा। व्यापारी को सर झुकाये देख महम्मद ने एक बोतल से तेल निकाल कर पगड़ी पर डाल लिया, तब दूकानदार से माफ़ी माँगते घर लौटा। पगड़ी को निछोड़ कर एक थाली में तेल जमा किया। हल्वा बनाने के लिए आटा और तेल तो मिल गये थे, अब गुड़ और लकड़ी की ज़रूरत थी।

रामलोचन त्रिपाठी

महम्मद फिर कपड़े बदल कर गुड़ की दूकान पर पहुँचा और दूकानदार से पूछा– "मेरे मालिक को गाड़ी-भर गुड़ चाहिये। आपके पास जो अच्छा माल है, उसमें से एक ढेला नमूने के लिए दे दो। यों मांग-मांग कर कई दूकानों से गुड़ के ढेले ले आया। उसमें से ज़रूरत भर के लिए गुड़ रखकर बाक़ी गुड़ बेचा और उन पैसों से लकड़ी ख़रीद ली।

हल्वा के तैयार होते-होते अंधेरा फैल गया। पति-पत्नी दोनों बैठकर खाना चाहते थे, उन लोगों ने सोचा कि दिया जलाने पर कोई देखेगा और तरह-तरह के सवाल पूछ बैठेगा, इसलिए अंधेरे में ही दोनों के बीच थाली रखकर धीरे से हल्वा खाने लगे।

इस बीच उनके घर वली नामक एक दूर का रिश्तेदार आ धमका। उसने देखा कि घर में तो अंधेरा है, मगर किसी की बातचीत सुनाई दे रही थी। उसने सारी बातें जान लीं, चुपचाप जाकर उनकी बगल में जा बैठा और वह भी हल्वा खाने लगा।

हल्वा खाते समय थाली में हाथ लग रहे थे, मगर पति-पत्नी ने सोचा कि वे हाथ उन्हीं के हैं। हल्वा जल्द खतम हो गयी। थाली में टटोल कर देखने पर भी कुछ हाथ न लगा।

"इतनी जल्दी हल्वा कैसे खतम हो गया? मैंने तो थोड़ा-सा ही खाया था!"

"मैंने भी थोड़ा-सा खाकर तुम्हारे लिए बाक़ी सारा छोड़ दिया है।" महम्मद ने जवाब दिया।

"तुम लोगों के साथ मैंने भी तो खाया है।" वली बीच में बोल पड़ा। दिया जलाकर पति-पत्नी ने वली को देखा।

अपनी पत्नी को हल्वा खिलाने के लिए महम्मद ने जो तक़लीफ़ें झेली थीं, यह कहानी सुनने पर वली को उस पर रहम आ गयी। तब उसने महम्मद के हाथ पैसे देकर जरीना के लिए वे सब चीजें मंगवायीं जिन्हें वह खाना चाहती थी।

अक्षय पूर्णिमा

[१०]

[खड्गवर्मा तथा जीवदत्त वृद्ध पुजारी को क़ैद से मुक्त करके शिथिल भवन से चल पड़े। रास्ते में पुजारिणी से उनका सामना हुआ। खड्गवर्मा ने उस पर बाण चलाया। इसके बाद वे मांत्रिक और जटाधारी भूत के साथ जंगल में पहुँचे। वहाँ पर उन लोगों ने पहाड़ पर से एक ऊँट को नीचे गिरते देखा। बाद–]

ऊँट को पहाड़ पर से नीचे गिरते देख खड्गवर्मा तथा जीवदत्त उस ओर दौड़ पड़े। ऊँचाई से नीचे गिरने के कारण ऊँट के पैर टूट गये थे। इसलिए वह छटपटाते ज़मीन पर लोट रहा था। उसके साथ नीचे गिरा हुआ व्यक्ति अपने घुटनों को दोनों हाथों से पकड़े दांत मींच कर अपनी पीड़ा को सहते कराह रहा था। उसकी पोशाकों को देख खड्गवर्मा और जीवदत्त ने अनुमान लगाया कि वह लूटेरों के दल का व्यक्ति है।

जीवदत्त लुटेरे के निकट जाकर बोला– "अरे लुटेरे, तुम्हारी जान कैसी मज़बूत है? ऊँचे पहाड़ से गिरने के कारण ऊँट के पैर टूट गये और वह दम तोड़ रहा है, जब कि तुम बाल-बाल बच गये हो।"

लुटेरा तब तक घुटने में मोच आने की वजह से दर्द के मारे परेशान था, उसने

खड्गवर्मा और जीवदत्त को अपने निकट आये देखा न था। अब उसने सर उठा कर उनकी ओर देखा तो विस्मय में आकर कांपते हुए कहा–"महाशय, मुझे मत मारो। गैण्डे की जाति के लोगों के खेतों को लूटनेवालों में मैं नहीं था। मेरी बातों पर यक़ीन न हो तो सच्ची बातें तुम लोग स्वर्णाचारी से पूछकर जान सकते हो।"

उसकी बातें सुन खड्गवर्मा और जीवदत्त के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्हें अब यह मालूम हो गया कि स्वर्णाचारी ज़िंदा है और वह लुटेरों के पास सुरक्षित है।

खड्गवर्मा ने झट तलवार निकाली, उसकी नोक को लुटेरे की छाती पर टिका कर गरजते स्वर में कहा–"अबे, अब सच-सच बताओ, वरना इस ऊँट के साथ तुम भी सियारों का खाना बन जाओगे। गैण्डे की जाति के लोगों के खेतों को लूटनेवालों में तुम भले ही न हो, मगर यह बात तो तुमने अपने दोस्तों के द्वारा ज़रूर सुनी होगी। इसलिए तुम्हारी बातें यक़ीन करने लायक़ हैं ही। मगर हमें देखते ही तुमने कैसे पहचान लिया कि हम गैण्डे की जाति के लोगों के मददगार हैं?"

जीवदत्त ने खड्गवर्मा से बताया कि वह अपनी तलवार म्यान में रख दे। तब बोला–"खड्गवर्मा, यह क़मबख़्त जान के डर से पहले ही कांप रहा है, इसे तुम और क्यों परेशान करते हो? उल्टे गैण्डों और खेतों की बात तो बहुत ही पुरानी पड़ गयी है।" इसके बाद वह लुटेरे की ओर मुड़कर बोला–"अबे, मेरे दोस्त ने तुम से जो आख़िरी सवाल पूछा, मैं भी यही पूछता हूँ कि तुमने हमें कैसे पहचान लिया? तुमने तो हमें देख लिया होगा। कहाँ पर हमें देखा?"

"महाशय, मैंने तुम लोगों को कहीं नहीं देखा था, मेरे मित्र ने जंगल में तुम

लोगों को देखा था। उसने तुम लोगों की पोशाकों और हथियारों का ज़िक्र किया था, अब तुम्हें देखते ही पहचान गया।" लुटेरे ने कहा।

"वाह, तुम बुद्धि में बृहस्पति की याद दिलाते हो? कहीं गुरुकुल खोलकर अपने शिष्यों को शिक्षा न देकर तुम लुटेरों के इस दल में क्यों शामिल हो गये हो? हाँ, यह बताओ, तुम लोग उन पत्थरों को ऊँटों पर लदवा कर कहाँ लिये जा रहा हो? किस लिये?" खड्गवर्मा ने हँसते हुए पूछा।

"महाशय, हमारे नेता के द्वारा स्थापित किये जानेवाले राज्य के लिए स्वर्णाचारीजी राजधानी नगर और एक विशाल दुर्ग का निर्माण करने जा रहे हैं। हमारे नेता के आदेशानुसार हम पहाड़ पर के पत्थर घाटी के एक समतल प्रदेश पर पहुँचा रहे हैं। इस काम में हम ऊँटों की मदद ले रहे हैं, हमारे पास सिवाय ऊँट के कोई दूसरी सवारी है ही नहीं।" लुटेरे ने बताया।

खड्गवर्मा और जीवदत्त पैर में मोच आये लुटेरे से बात कर रहे थे, इसलिए वे यह देख नहीं पाये कि पहाड़ पर क्या हो रहा है। वहाँ पर लुटेरे के साथियों ने देखा कि ऊँट के साथ उनका एक साथी

नीचे गिर गया है। इसलिए उन लोगों ने अपने ऊँटों को रोक कर नीचे देखा। तभी खड्गवर्मा और जीवदत्त को अपने साथी की ओर बढ़ते उन लोगों ने देखा।

उन क्षत्रिय युवकों को देखते ही पहाड़ पर रहनेवाले लुटेरे सहम गये। उनमें से कुछ लोग यह बात भूल नहीं पाये थे कि जंगल में एक बार खड्गवर्मा और जीवदत्त ने उनका सामना करके बाणों तथा तलवारों के वार से उनके कैसे छक्के छुड़ाये थे। एक-दो लुटेरे ने यह भी देखा था कि खड्गवर्मा और जीवदत्त मांत्रिक तथा जटाधारी भूत को भगा कर गुफा में कैसे घुस गये थे।

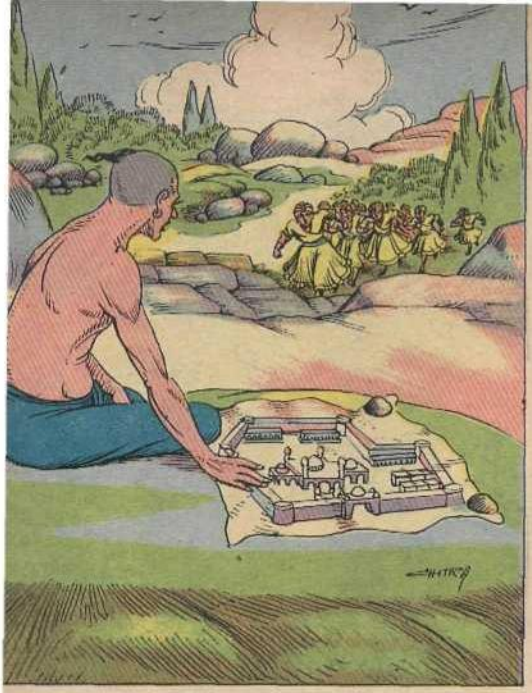

"हमारा नेता यहाँ पर नहीं है। उन क्षत्रिय युवकों ने हमें देख लिया है। इसलिए ये दोनों पहाड़ पर आकर हमारी जान ले लेंगे, इसलिए हमें बचने की कोशिश करनी चाहिये।" एक लुटेरे ने बताया।

"होनेवाले खतरे से यदि हमें बचना है तो एक ही उपाय है। वह यह कि अभी स्वर्णाचारी के पास जाकर सारी बातें उन्हें सुना दें और वे जैसा करने को कहें, वैसा करें! हम यह भी जानते हैं कि स्वर्णाचारी इसके पहले इन क्षत्रिय युवकों का मित्र भी है। वह शायद हमें इन लोगों से बचा सकता है, चलो यहाँ से।" एक दूसरे लुटेरे ने बताया।

इसके बाद दस-बारह लुटेरे स्वर्णाचारी के पास दौड़ कर चले गये। उस वक़्त स्वर्णाचारी एक ऊँची शिला पर बैठे दुर्ग का मानचित्र जांच रहा था जिसे वह लुटेरों के नेता के लिए बनानेवाला था।

लुटेरों को अपने पास आते देख स्वर्णाचारी ने मानचित्र पर से अपनी दृष्टि हटायी और कड़क कर कहा–"अरे, तुम सब अपना काम छोड़ इस तरह भागे आ रहे हो, मानो किसी राक्षस के चंगुल से बचकर भाग आये हो? तुम्हारे नेता को शिकार खेल कर लौटने दो, उनसे बताकर तुम लोगों की चमड़ी उधेड़वा दूंगा।"

लुटेरों में से एक ने कांपते स्वर में कहा–"महाशय, जब हमारे नेता गैर हाज़िर रहेंगे, तब आप ही तो हमारे नेता हैं। हमारा एक ऊँट पैर फिसलने के कारण अपने सवार के साथ पहाड़ की तलहटी में गिर गया है। इसे देखते ही उस रास्ते चलनेवाले आपके पुराने मित्र जो दो क्षत्रिय युवक हैं, तलवार और बाण लेकर हमारे साथी के पास पहुँचे और उससे तरह-तरह के सवाल पूछ रहे हैं। हमें इस बात का डर लगा हुआ है कि उसके द्वारा हमारा पता लगा कर वे लोग हमारा अंत करने के लिए यहाँ पर आ धमकेंगे।"

क्षत्रिय युवकों की बात सुनते ही स्वर्णाचारी चौक उठा और वह ख़ुशी में आकर शिला पर से उठ खड़ा हुआ। लुटेरों के द्वारा सारी बातें सुनने के बाद उसे विश्वास हो गया कि उसके दोनों मित्र निकट के प्रदेश में आ गये हैं।

स्वर्णाचारी पहाड़ी आंचल की ओर रवाना होते हुए बोला–"अरे ऊँटवाले! तुम एक बात में यह बता सकते थे कि क्षत्रिय युवक यहाँ पर आ गये हैं, पर तुमने घुमा-फिरा कर क्या क्या बक दिया? अब चुपचाप मेरे पीछे चले आओ। तुम लोगों को डरने की कोई बात नहीं है, समझें।"

"आचारीजी, ऐसा ही करेंगे! लेकिन उनके जरिये हमारी जान के लिए कोई ख़तरा न होगा न?" लुटेरों ने संदेह भरे स्वर में पूछा।

"अरे डरपोक, ऐसी कोई बात नहीं है। उनके द्वारा तुम्हारे प्राणों के लिए कोई ख़तरा न होगा। मैं तुम्हारे प्राणों के लिए अपनी जान लड़ाने को तैयार हूँ। मगर तुम लोगों को बड़ी सावधानी से उनके साथ व्यवहार करना होगा।" स्वर्णाचारी ने समझाया।

स्वर्णाचारी ने पहाड़ी आंचल के निकट जाकर खड्गवर्मा और जीवदत्त को ज़ोर से पुकारा। इस पर क्षत्रिय युवकों ने सर उठाकर देखा और स्वर्णाचारी को पहचान लिया। उसके पीछे कुछ लुटेरों को खड़े देख खड्गवर्मा ने बताया–"जीवदत्त, मुझे शक हो

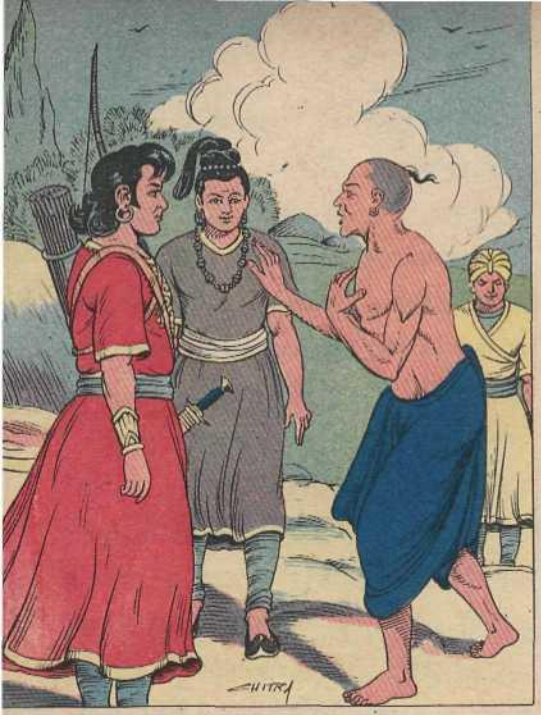

रहा है कि पद्मपुर का वास्तुशास्त्री तथा यंत्रोंवाले हाथी का निर्माण करनेवाला यह स्वर्णाचारी लुटेरों के दल में तो शामिल नहीं हो गया है ? हमें तो सावधान रहना है।"

खड्गवर्मा के मुंह से यह संदेह निकलने पर जीवदत्त के मन में भी थोड़ा शक पैदा हो गया। स्वर्णाचारी को ये लोग ज़बर्दस्ती उठा लाये थे। मगर हो सकता है कि बाद को उनके साथ स्वर्णाचारी की मैत्री हो गयी हो.....

"खड्गवर्मा, हमें विन्ध्याचल पहुँचने तक दिन-रात सावधान ही रहना होगा। इसमें कोई शक नहीं है। हम तो स्वर्णाचारी को लुटेरों से मुक्त करने के लिए ही यहाँ पर आये हैं। फिर भी देख लेंगे, स्वर्णाचारी का क्या रवैया है?" जीवदत्त ने कहा।

खड्गवर्मा और जीवदत्त यों बात कर ही रहे थे कि स्वर्णाचारी चार लुटेरों के साथ उसके पास आया और श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया। इस पर उसके साथ आये लुटेरों ने बारी-बारी से क्षत्रिय युवकों के सामने साष्टांग दण्डवत किया।

जीवदत्त ने हंसते हुए स्वर्णाचारी की पीठ थपथपायी और कहा–"स्वर्णाचारी, कैसे हो ? क्या तुम लुटेरों के नेता के लिए जादू के हाथी और घोड़े तो नहीं बना रहे हो ? हम ने सोचा था कि तुम इन के हाथों में बड़ी मुसीबतें झेलते होगे। अब लगता है कि तुम भी लुटेरों के दल का एक छोटा नेता बने हुए हो!"

ये बातें सुन स्वर्णाचारी पल-भर के लिए चकित रह गया। उसने दोनों हाथ जोड़ कर कहा–"आप लोगों ने एक बार मेरे प्राण बचाये, इसके लिए मैं ज़िंदगी-भर आप लोगों के लिए कृतज्ञ रहूँगा। मैं लाचार होकर लुटेरों के नेता के लिए एक क़िला बनवा रहा हूँ। उसके पूरा होते ही मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा और विघ्नेश्वर पुजारी से मिलकर हम दोनों किसी जंगल में तपस्या करेंगे।"

"विघ्नेश्वर पुजारी गैण्डे की जातिबालों के अरण्यपुर में आराम से है। यहाँ पर तुम आराम से हो न? अब हम अपने रास्ते चले जायेंगे।" जीवदत्त ने कहा।

ये बातें सुन स्वर्णाचारी विकल हो बोला–"क्या आप लोग एक दिन भी मेरा आतिथ्य ग्रहण किये बिना चले जायेंगे? यह कभी नहीं हो सकता। आप लोग आज दिन और रात मेरे और समरबाहू के अतिथि बन कर रहिये।"

"समरबाहू कौन है?" जीवदत्त ने विस्मय में आकर पूछा।

"ओहो, आप लोगों ने इसके पहले क्या लुटेरों के नेता का नाम नहीं सुना है? सिंधु रेगिस्तान से ऊँटों पर आये लुटेरों के नेता का नाम है यह। इस वक़्त वह घर पर नहीं है। दो अनुचरों के साथ शिकार खेलने जंगल में गया हुआ है। अब चलिये।" यों कहते स्वर्णाचारी आगे बढ़ा। खड्गवर्मा और जीवदत्त रवाना होते हुए घायल लुटेरे को उन्हें दिखा कर बोले–"इसे तुम लोगों को कंधों पर उठा ले जाना होगा।"

इसके तुरंत बाद दो लुटेरों ने उसे कंधों पर उठा लिया। तब सब मिल कर थोड़ी देर में पहाड़ पर रहनेवाले लुटेरों के निवास पर पहुँचे। वहाँ पर भालू के चमड़े धारण किये हुए एक व्यक्ति के चारों ओर इकट्ठे

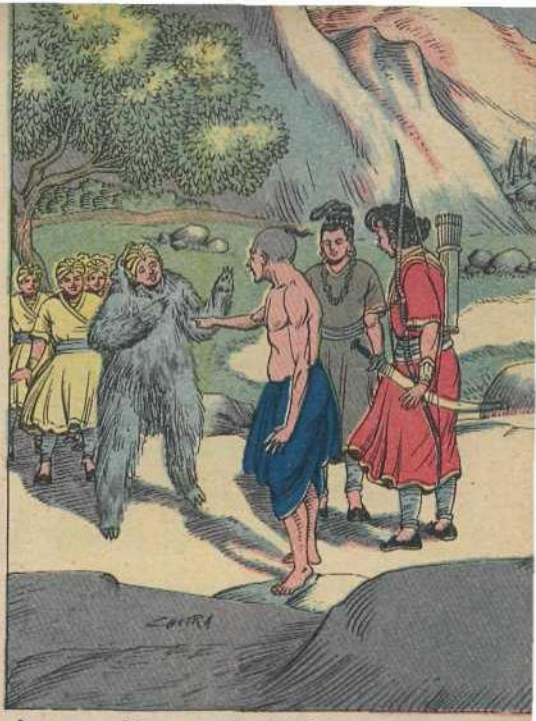

हो कुछ लुटेरे बात कर रहे थे। खड्गवर्मा, जीवदत्त और स्वर्णाचारी को भी दूर से देखते ही वे सब उनके पास दौड़ आये।

"यह सब शोरगुल क्या है? तुम भालू का वेष बनाकर यह क्या नाच रहे हो?" स्वर्णाचारी ने उसे डांटा।

भालू का चमड़ा धारण किये हुए व्यक्ति ने झुककर उसे सलाम किया और बोला–"स्वर्णाचारीजी, मैंने ये चमड़े जान-बुझकर नहीं पहने हैं। आज सुबह मैं भी नेता के साथ शिकार खेलने गया था। हमारे नेता को जंगली जाति के क्रूर व्यक्ति बन्दी बनाकर ले गये हैं। मैं उनके हाथों से बच कर भाग आया हूँ।"

"लुटेरों के नेता समरबाहू को क्या जंगली लोग पकड़ कर ले गये हैं? ऐसे महा वीर को बन्दी बनानेवाले जंगली लोग इस प्रदेश में कहाँ पर हैं?" खड्गवर्मा ने मुस्कराते हुए पूछा।

"खड्गवर्मा, चाहे वह बड़ा दुष्ट ही क्यों न हो, पर लगता है कि वह उससे भी अधिक दुष्टों के हाथों में फँस गया है। तुम हँसो मत, न मालूम बेचारे का क्या हाल हुआ होगा?" जीवदत्त ने कहा।

लुटेरों के नेता के जंगली लोगों के हाथों में बन्दी बन जाने का समाचार सुनते ही स्वर्णाचारी आपादमस्तक कांप उठा। वह अपने बारे में सोचने लगा। वह लुटेरों के हाथ बन्दी तो बन गया था, लेकिन धीरे-धीरे लुटेरे उसके साथ अच्छा व्यवहार करने लग गये थे और उनके नेता समरबाहू के साथ उसकी अच्छी मैत्री भी हो गयी थी।

"क्षत्रिय वीरो, यह तो एक भयंकर घटना है। आप दोनों शक्तिशाली हैं; किसी भी तरह जंगलियों से समरबाहू को छुड़ाने का प्रयत्न कीजिये।" स्वर्णाचारी ने दुखी हृदय से कहा।

जीवदत्त ने खड्गवर्मा की ओर देखा। खड्गवर्मा ने अनिच्छापूर्वक सर हिलाते हुए कहा–"जीवदत्त! इस संबन्ध में तुम्हें ही कोई निर्णय करना होगा। हमारा मित्र स्वर्णाचारी का अनुरोध है। क्या हम उसे बचावे? तुम्हारी जैसी इच्छा?"

जीवदत्त ने पल भर सोचकर भालू का चमड़ा पहने हुए व्यक्ति से पूछा–"अबे, तुम्हारे नेता और उसके एक अनुचर को जंगलियों ने कैसे बन्दी बनाया? जंगल में क्या बात हो गयी? सारी बातें साफ़-साफ़ बतला दो।"

भालू के चमड़ेवाले ने कहा–"हुजूर! सारी बातें संक्षेप में बता देता हूँ। आप जल्दी उनकी रक्षा के लिए चल न पड़े तो हो सकता है कि वे नरभक्षक हमारे नेता को जला कर खा डाले।"

(और है)

गरीब का दंभ

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा–"राजन्, तुम्हारे हठ पर मुझे ख़ुशी हो रही है, लेकिन यह हठ कभी-कभी जान ले बैठता है। इसके उदाहरण स्वरूप मैं तुम्हें किंशुक की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

वेताल यों कहने लगा : मणिपुर राज्य में एक अत्यंत गरीब आदमी रहा करता था। उसके न कोई घर-द्वार था और न कोई रिश्तेदार और दोस्त थे। ज़मीन-जायदाद तो नाम मात्र के लिए भी न थी। ऐसे लोग मेहनत करके या भीख माँग कर अपने पेट पालते हैं, मगर किंशुक ये दोनों काम नहीं करता था। अगर कोई ख़ुद बुलाकर थोड़ा खाना देते तो खा लेता,

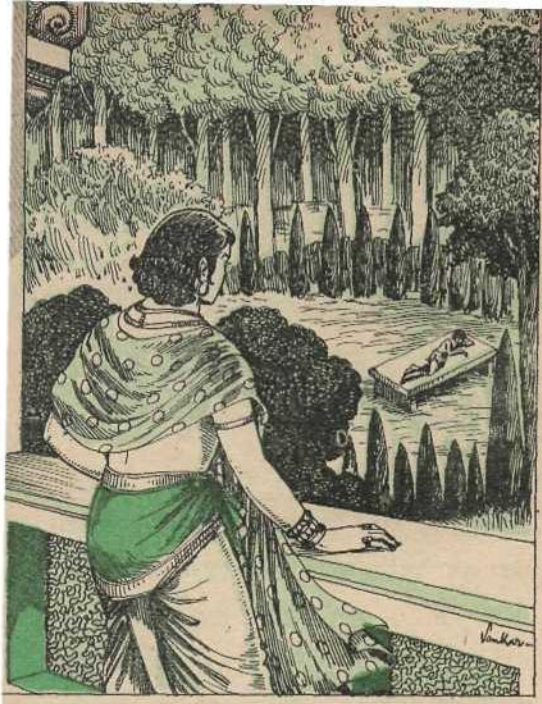

वरना तालाब का पानी पीकर पेड़ के नीचे लेट जाता था।

उसकी यह बात सारे शहर में फैल गयी। उसके दंभ के बारे में लोग सब जगह कहा-सुना करते थे। कुछ लोग क्रोध में आकर यहाँ तक बताते थे कि जो खाने के लिए मुँहताज है, उसे ऐसा घमण्ड! जो दयालू होते थे, वे उसे अपने घर बुला कर खाना खिलाते थे। किंशुक सारी गलियों में घूमता; दयालू लोग खाना खिलाते तो खा लेता, वरना फ़ाका रहता, मगर वह किसी से याचना नहीं करता था।

किंशुक की बात मणिपुर के राजा को भी मालूम हो गयी। कई बार जब वह राजमहल से होकर गुजरता तब राजा के सेवक उसे दिखाकर कहते–"महाराज, यही वह दंभवाला भिखारी किंशुक है।" राजा भी यही सोचा करता था कि मौक़ा मिलने पर उसकी परीक्षा लेनी है।

एक दिन शाम को राजा अपने महल की छत पर ठण्डी हवा में टहल रहा था, तब उसने देखा, भिखारी किंशुक उद्यान में एक चबूतरे पर लेटा आराम कर रहा है। देखने में वह ऐसा लगता था, मानों दो-तीन दिनों से उसने कुछ खाया-पिया नहीं। उसके चेहरे पर ज़रा भी दमक न था।

राजा ने एक सेवक को बुला कर आदेश दिया–"तुम बगीचे में लेटे हुए उस गरीब को खाना और दूध ले जाकर दे दो।"

सेवक एक थाली में भोजन और एक गिलास में दूध ले जाकर किंशुक से बोला–"तुम इसे खा-पी लो।"

भूख से परेशान किंशुक खाना देखते ही खुश तो हुआ, मगर वह दंभी और आलसी था, इसलिए उसने उन्हें लिये बिना पूछा–"यह खाना किसने भेजा है?"

"राजा ने भेजा है।" सेवक ने राजमहल की छत की ओर उंगली दिखाते हुए जवाब दिया।

किंशुक ने सर उठा कर महल की ओर देखा, पर उसे वहाँ पर कोई दिखाई न

दिया। वह भूखा था, इसलिए उसने जल्दी-जल्दी खाना खा लिया और दूध पीकर बोला–"राजा को मेरी कृतज्ञता बतला दो।"

सेवक ने महल की ओर लौटते कहा–"तुम्हें कल से भूख से परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है। राजा का तुम पर अनुग्रह हो गया है। जब भी तुम्हें भूख लगे, तुम राजमहल में आ जाओ और भर पेट खाना खाकर चलते बनो।"

राजा के सेवक ने किंशुक को भिखमंगा समझ लिया था। इस पर किंशुक का चेहरा तमतमा उठा, पर उसने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन भीतर ही भीतर उसे इस बात का गर्व था कि उस पर राजा का अनुग्रह हो गया है। उसे आज तक जितने भी लोगों ने आतिथ्य दिया, पर वे सब मामूली आदमी थे। आज उसने राजा का आतिथ्य प्राप्त कर लिया है।

इसके बाद दूसरे दिन किंशुक सारे नगर में पागल कुत्ते की भांति घूमता रहा। उसे उस दिन किसीने खाना नहीं खिलाया। तीसरे दिन शाम तक वह घूमता रहा, पर उसे कहीं खाना नहीं मिला।

तीसरे दिन की शाम को वह फिर उद्यान में चला गया और उसी चबूतरे पर लेट गया।

उस दिन राजा के सेवक ने एक थाल में अच्छा भोजन, माँस, फल और खीर रखकर किंशुक से कहा–"मैंने तुमसे कहा था कि तुम्हें यहाँ पर रोज़ अच्छा खाना मिल जायगा। मगर दो दिन से तुम यहाँ पर क्यों नहीं आये?"

"मुझे इस बगीचे में लेटने में बड़ा अच्छा लगता है। मै इस डर से यहाँ पर नहीं आता हूँ कि राजा यह सोच ले, मैं सिर्फ़ खाने के लिए यहाँ आता हूँ।" किंशुक ने जवाब दिया।

इसके बाद वह जल्दी-जल्दी सारा खाना खाकर वहाँ से चला गया। फिर एक सप्ताह तक किंशुक बगीचे में नहीं आया। एक सप्ताह बाद राजा ने किंशुक को देखा तो वे अचरज में आ गये। वह बगीचे में चल रहा था तो लगता था, मानो लाश चल रही है। राजा ने अपने सेवक को बुलाकर इस बार वही खाना भेजा, जिसे वह खुद खाता है। भोजन की थाली के दूर रहते ही उसकी गंध आ गयी। थाली पर से पत्तल को उठा कर देखा, तो उसमें खाने के साथ मलाईवाला दही और मिठाई भी है।

वह खाना खाकर किंशुक जो चला गया, फिर दस दिन तक वह बगीचे की ओर नहीं लौटा। राजा ने यह सोचकर अपने सेवकों को उसे ढूँढने भेजा कि कहीं वह मर गया होगा।

राजा के सेवक मरने की हालत में स्थित किंशुक को उठा लाये और राजा के सामने रख दिया। उसकी हालत पर सब को दया आ गयी।

किंशुक को देख राजा की आँखों में आँसू भर आये। उसने कहा–"किंशुक, मुझे माफ़ कर दो।"

"महाराज, दोष तो मेरा है, आपका नहीं।" यों कहते किंशुक ने उसी वक़्त प्राण छोड़ दिये।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन्, किंशुक राजा के द्वारा दिये

जानेवाले पौष्ठिक भोजन करते हुए भी दुर्बल हो मरने की हालत में क्यों पहुँचा? राजा ने उससे माफ़ी क्यों माँगी? किंशुक ने यह क्यों कहा कि दोष उसी का है? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न बताओगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने जवाब दिया– "किंशुक को शहर के लोग जो भी कुछ खाना देते, वह खा लेता, इस तरह का वह आदी हो गया था। लेकिन राजमहल का खाना खाने के बाद वह दूसरों का दिया हुआ साधारण खाना नहीं खा पाया, इस वजह से वह दुर्बल हो गया होगा। राजा ने किंशुक की परीक्षा लेने के लिए खाना दिलवाया था, मगर उस पर रहम करके नहीं। राजा ने तो किंशुक के दंभ की परीक्षा ली। उसने सोचा कि राजा जो खाना देता है, उसे खाने के लिए किंशुक रोज बगीचे में आयेगा और इस तरह उसका हठ जाता रहेगा। पहले लगा कि राजा की परीक्षा सफल हो गयी है। क्योंकि किंशुक दो बार सिर्फ़ खाने के लिए ही बगीचे में आया था। मगर उसके हठ के ढीला होते देख वह भूख के मारे मर जाने के लिए तैयार हो गया। राजा ने कभी नहीं सोचा था कि वह ऐसा साहस कर बैठेगा। किंशुक की मौत का कारण राजा की परीक्षा है, इस वजह से राजा ने उससे माफ़ी माँग ली। किंशुक ने अपना दोष इसलिए स्वीकार कर लिया कि वह दूसरी और तीसरी बार बगीचे में न आता और यह नहीं सोचता कि उस पर राजा के मन में वात्सल्य पैदा हो गया है, तो वह साधारण जीवन बिता देता। असल में किंशुक का दोष यह था कि वह यह समझ नहीं पाया कि राजा उसके हठ और दंभ की परीक्षा ले रहा है।"

राजा के इस तरह मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

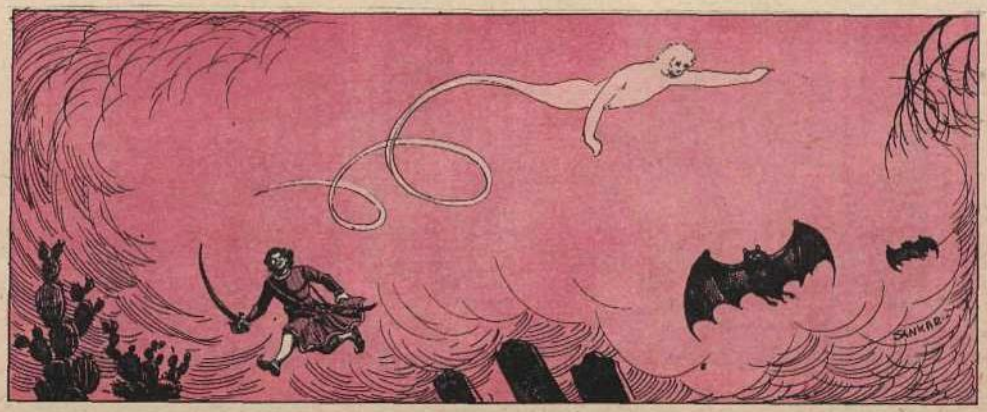

मूर्ख राजा

प्राचीन काल में तिरूच्चिनापल्ली पर राजा शूरसेन शासन करता था। वह बड़ा ही मूर्ख था, मगर उसका मंत्री सुबुद्धि बड़ा अक्लमंद था।

एक दिन राजा ने कावेरी के तट पर जाकर देखा कि नदी पूरब की ओर बह रही है। उसने मंत्री को बुलाकर आज्ञा दी–"देखो मंत्री, हमारे पूरब में स्थित तंजाऊर राज्य हमारा दुश्मन है। हमारे देश से बहकर जानेवाले पानी से वे लोग फ़सल क्यों पैदा करे? तुरंत नदी पर बांध बंधवा दो।"

मूर्ख राजा को समझाने से कोई फ़ायदा न होगा, यह सोच कर मंत्री ने एक महीने के अन्दर नदी पर बांध बंधवाया। नदी में बाढ़ आ गयी और शहर में पानी घुस आया। लोग भयभीत हो गये। राजा से बिनती करने से डरते थे, इसलिए मंत्री से निवेदर किया कि इस विपति से उन्हें बचा ले। मंत्री ने उन्हें हिम्मत बंधवाकर भेज दिया, तब घडियाल को बुलाकर आज्ञा दी–"तुम आज रात को हर आध घंटे पर घंटा बजाओ और आधी रात के वक्त भेरी बजा दो।"

राजा ने भेरी की आवाज़ सुनी तो यह सोचकर उठ बैठा कि सवेरा हो गया है। मगर पूरब में सूरज उगा न था। उसने मंत्री को बुलाकर पूछा–"आज सूरज क्यों अभी तक नहीं उगा?"

"महाराज, हमने पानी पर बांध बांधकर उसे रोक दिया, इसलिए तंजाऊरवालों ने सूरज को बन्दी बनाया होगा।" मंत्री ने जवाब दिया।

"तब तो तुरंत बांध को तुड़वा दो।" राजा ने मंत्री को आदेश दिया।

कंजूस सौदागर

कुंतीपुर नामक गाँव में उपल नाम का एक सौदागर था। उसका पुत्र विष्णु पढ़ा-लिखा और उत्तम स्वभाव का था। उसे अपने पिता का लेन-देनवाला व्यापार कतई पसंद न था। इसलिए उसने अनाज का व्यापार शुरू किया और उचित मूल्य पर अनाज बेचने लगा।

उसी गाँव में चौधरी वंश का एक परिवार था। उस परिवार का प्रधान दीनू चौधरी एक जमाने में मशहूर व्यापारी था। वह अपने साझेदार के हाथ धोखा खाकर अपना सब-कुछ खो बैठा था। मगर स्वभाव से वह भला आदमी था, पर इस वक़्त वह गरीब था।

दीनू की बेटी लक्ष्मी बड़ी शीलवती थी। वह विवाह के योग्य हो गयी थी, लेकिन उसका विवाह करने के लिए दीनू चौधरी के पास पर्याप्त धन न था।

कंजूस उपल इस आशा में बैठा था कि कोई राजकुमारी आधे राज्य के साथ उसकी बहू बन बैठेगी। वास्तव में लक्ष्मी विष्णु के लिए सब तरह से योग्य पत्नी थी। विष्णु को पहली बार देखते ही लक्ष्मी की माँ ने सोचा कि वह यदि उसका दामाद बन जाय तो क्या ही अच्छा हो!

विष्णु ने भी लक्ष्मी को तालाब से पानी ले जाते देख उसे अपनी पत्नी के रूप में मन में वर लिया था। एक दिन दीनू की पत्नी ने अपने पति से कहा–"एक बार उपल से मिलकर यह क्यों नहीं पूछ लेते कि हमारी लक्ष्मी को उनकी वधू बना ले। इससे बढ़िया संबंध हमें और कहाँ मिल सकता है?"

"तुम यह बात बिलकुल भूल जाओ, उपल अपने पुत्र के द्वारा खूब धन वसूल करने की फ़िक्र में है। हमारे जैसे गरीब

ए. सी. सरकार, जादूगर

परिवार में वह अपने बेटे के लिए थोड़े ही ब्याह लेगा?" दीनू ने उत्तर दिया।

दीनू की पत्नी ने विष्णु को एक दिन अपने घर खाने को बुलाया और अपना विचार उसके सामने रखा।

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है। आपकी कन्या सुंदर और सुशीला है। एक जमाने में आपका परिवार भी संपन्न था; फिलहाल भले ही आपके पास धन न हो, मगर मैं केवल कन्या को चाहता हूँ, धन नहीं। किंतु मेरे पिताजी सिर्फ़ धन चाहते हैं। उनके धन की दाह को यदि कोई दूर कर सके तो लक्ष्मी को अपनी बहू के रूप में वे स्वीकार करेंगे। आप लोग धन के द्वारा उनकी दाह को दूर नहीं कर सकेंगे. इसलिए कोई दूसरा उपाय सोच लीजिये।" विष्णु ने बताया।

जब विष्णु और लक्ष्मी की माँ के बीच यह बातचीत चली तब लक्ष्मी का मामा श्यामगुप्त वहीं पर था। वह बड़ा ही समझदार था। सारी बातें सुन कर उसने कहा–"अच्छी बात है, मैं इसके बारे में विचार करूँगा, विष्णु और लक्ष्मी का विवाह संपन्न करने की जिम्मेदारी मेरी है।"

दूसरे दिन सवेरे श्यामगुप्त उपल के घर पहुँचा। इधर-उधर की बातचीत के बाद अंत में पूछा–"हाँ, आप लक्ष्मी को विष्णु की वधू क्यों नहीं बना लेते?"

"वाह, आपने भी ख़ूब कहा? जिस परिवार के लिए खाने का ठिकाना नहीं,

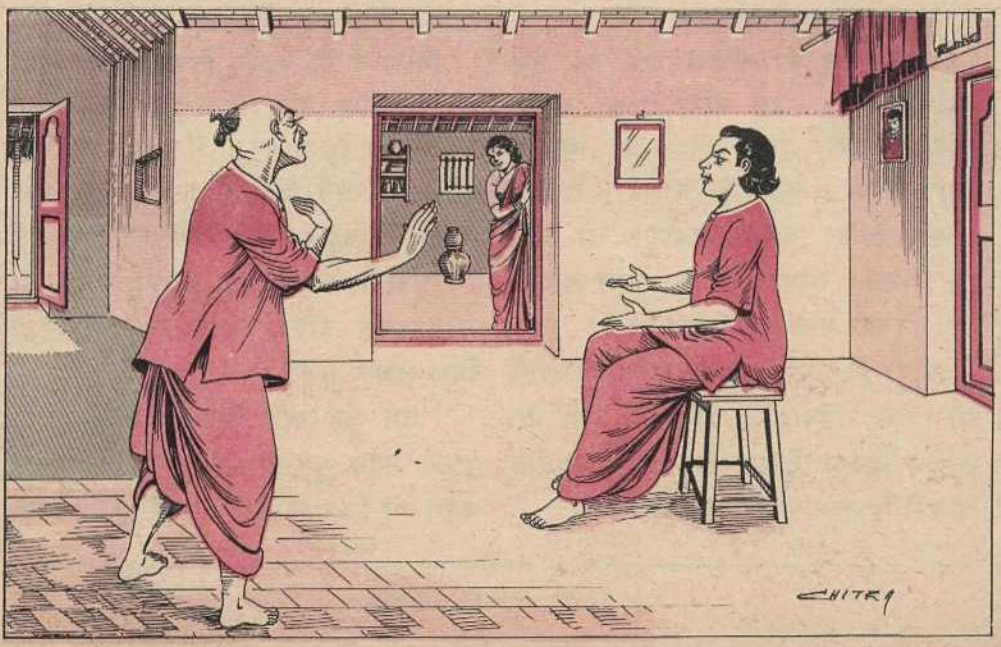

उस परिवार की कन्या को मैं अपनी बहू बना लूं? यह कभी नहीं हो सकता।" उपल ने उत्तर दिया।

इस पर श्यामगुप्त ने बिना झिझक के कहा–"तब तो आप मेरी भानजी की अद्‌भुत शक्ति की बात नहीं जानते? वह तो साधारण पानी पर फूंक मार कर मीठा जल बना सकती है।"

उपल ने विस्मय में आकर पूछा–"क्या कहा? कैसे?"

"जी हाँ, आप तो हमेशा दहेज़ और उपहार की ही बातें सोचते हैं, वे तो आज मिल जाते हैं और कल खर्च भी हो जाते हैं, मगर यदि लक्ष्मी आपकी बहू बन गयी तो बिना पैसा खर्च किये मधुर पेय बना कर उन्हें बेचकर लाखों रुपये कमा सकते हैं।" श्यामगुप्त ने समझाया।

धन की बात सुनते ही उपल उछल पड़ा और पूछा–"क्या यह बात सच है?"

"आज शाम को आप मेरी बहन के घर आइये। आप खुद जांचकर देख लीजिये कि मैंने जो बातें बतायीं, वे सच हैं, या झूठ हैं! हाँ, आप वहाँ पर आते वक़्त अपने साथ एक गिलास पानी लेते आइये।" श्यामगुप्त ने कहा।

उस दिन शाम को उपल अपनी पत्नी और बेटे को साथ ले दीनू चौधरी के घर पहुँचा। उपल की पत्नी लक्ष्मी की सुंदरता और गुण देख मुग्ध हो उठी और

मन में सोचा कि यह कन्या उसकी बहू बने तो क्या ही अच्छा हो।

उपल ने एक गिलास उठाकर लक्ष्मी से कहा–"लो, मैं पानी लाया हूँ। तुम्हारे मामा ने बताया है कि इसे मधुर पेय बनाने की तुम शक्ति रखती हो। इसे मधुर पेय बनाकर दिखा दो तो सही।"

लक्ष्मी ने उपल से कहा–"पहले आप उस गिलास का थोड़ा सा पानी पीकर देख लीजिये कि उसका स्वाद कैसा है?"

उपल ने थोड़ा जल पीकर कहा–"इसका स्वाद तो साधारण पानी जैसा ही है।"

लक्ष्मी ने उपल के हाथ से गिलास लेकर पानी पर एक फूंक लगायी और उसे फिर उपल के हाथ देते हुए बोली–"अब इसका स्वाद कैसा है, पीकर बता दीजिये।"

उपल ने पानी पीकर उसका स्वाद देखा और उछलकर बोला–"बेटी, अद्‌भुत है! तुम्हें मैं अपनी बहू बना लेता हूँ, लो, विवाह के निर्णय के रूप में यह हार ले लो।" लक्ष्मी और विष्णु का विवाह वैभव के साथ संपन्न हुआ। दीनू चौधरी को एक पैसा भी ख़र्च न करना पड़ा। सारा ख़र्च उपल ने ही उठाया।

इसके बाद विष्णु ने लक्ष्मी से पूछा–"तुमने उस दिन पानी को मीठा कैसे बनाया?"

"शाकरीन मिलाया था जी, शाकरीन? मेरे मामा ने मेरी उंगली में शाकरीन लगाया था। आपके पिताजी के हाथ से गिलास लेते समय मैंने अपनी उंगली को पानी में डुबोया था। इससे पानी मीठा बन गया।" लक्ष्मी ने उत्तर दिया।

"तो अब तुम क्या करोगी?" विष्णु ने पूछा।

"मैं यही बताऊँगी कि शादी के साथ अब मेरे वंश का नाम बदल गया तब उसके साथ मेरी अद्‌भुत शक्ति भी जाती रही। बाक़ी बातें आप और आपकी माँ देख लें।" लक्ष्मी ने समझाया।

कमर की इच्छा पर सुलतान ने फ़ारस के उस पंडित को क़ैद से छुड़ाया, अच्छे वस्त्र देकर उसका सत्कार किया। मगर उसने अपनी बेटी की बात नहीं उठायी। क्योंकि सुलतान किसी भी हालत में बूढ़े के साथ अपनी बेटी का ब्याह नहीं करना चाहता था। बूढ़ा यह सोचकर मन ही मन पछताने लगा कि मैंने शहजादा को क्यों नाहक़ घोड़े पर सवार होने दिया। अब शहजादा घोड़े की घुंड़ियों का रहस्य जान गया था।

लेकिन सुलतान का दिल उस घोड़े को लेकर परेशान था। उसने अपने बेटे से कहा–"बेटा, मुझे लगता है कि तुम कभी उस घोड़े पर सवार मत होओ। उसकी सारी घुंडियों का रहस्य शायद तुम न जानते हो, इसलिए उसके द्वारा ख़तरा पैदा होने की गुंजाइश है।"

मगर कमरल आक्मार अपने बाप की आज्ञा का पालन नहीं कर पाया।

बात यों हुई, शहजादा कमर सना नगर की शहजादी षम्स आल नहर को पल-भर भी भुला नहीं पाया। उत्सव और दावतों के वक़्त भी उसके दिल में शहजादी बैठी हुई थी। एक दिन सुलतान ने संगीत का आयोजन किया। एक गायकी मधुर स्वर में प्रेम गीत गाने लगी, उसे सुनते शहजादा कमर के दिल में विरह की पीड़ा सताने लगी। वह महल की सीढ़ियाँ पार कर छत पर पहुँचा। घोड़े पर सवार हो घुंड़ी दबा दी। दूसरे ही क्षण घोड़ा पक्षी की भाँति आसमान में उड़कर चला गया।

दूसरे दिन सवेरे उठ कर सुलतान ने देखा। शहजादे का कहीं पता नहीं है। राजमहल की छत पर घोड़ा भी नहीं है। सुलतान यह सोच कर पछताने लगा कि मैंने उसी वक़्त उस घोड़े को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं किया। उसने निश्चय कर लिया कि इस बार घोड़े के लौटने पर उसका ध्वंस करना चाहिये, तब वह फिर दुख के सागर में डूब गया।

(और है)

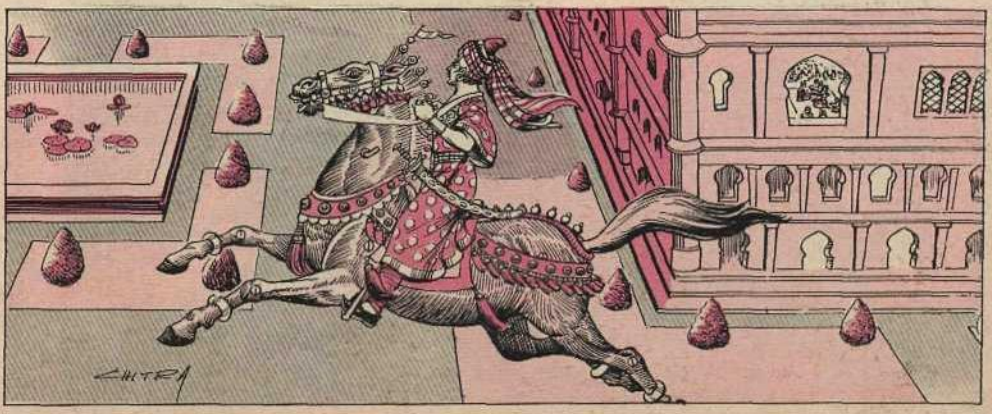

अंग्रेज की अक्लमंदी

एक डच देश का निवासी, एक फ्रांसीसी तथा एक अंग्रेज के बीच गहरी दोस्ती थी। वे तीनों एक बार मृत्यु शय्या पर रहनेवाले अपने एक दोस्त को देखने गये। वह अपने तीनों मित्रों को देख बहुत खुश हुआ। उसने उनसे अपनी अंतिम इच्छा यों बतायी– "मेरे मरने के बाद मेरी शवपेटिका में तुम तीनों पांच-पांच पाऊण्ड धन डाल दो, इसी से मुझे बड़ा संतोष होगा।"

मृत्यु शय्या पर रहनेवाला मित्र मर गया। डच देश के निवासी ने शवपेटिका में पांच पाऊण्ड धन डाल दिया।

फ्रांसीसी ने यह सोचकर पांच पाऊण्ड का चेक लिखकर शवपेटिका में डाल दिया कि 'मरा हुआ व्यक्ति इसे भुना नहीं सकेगा।'

अंग्रेज ने झट अपना चेक बुक निकाला, पंद्रह पाऊण्ड का चेक लिखकर शवपेटिका में डाल दिया, डच निवासी का डाला पांच पाऊण्ड और फ्रांसीसी का चेक लेकर अपनी जेब के हवाला कर दिया।

वसीयतनामा

जेरुसलेम नगर में एक मशहूर व्यापारी था। उसके एक ही पुत्र था। व्यापारी दूर देशों में जाकर व्यापार करता था। इसलिए उसका पुत्र घर पर रहकर पढ़ता था। व्यापारी जब दूर देशों में जाता तब उसके साथ उसका एक गुलाम रहा करता था।

एक बार व्यापारी जब दूर के देशों में था, तब वह बीमार पड़ा। उसकी बीमारी के सुधरने के लक्षण दिखाई नहीं दिये। अपनी मौत को निकट देख व्यापारी अपने बेटे के बारे में चिंता करने लगा। वह तो अभी लड़का है। व्यापारी यदि अपनी सारी संपत्ति अपने बेटे के नाम लिख देता तो गुलाम उसे हड़प कर लड़के को अनाथ बना सकता है। ऐसा होने से रोकने के लिए वसीयतनामा कैसे लिखा जाय, यही चिंता की बात थी; इसलिए इसके बारे में खूब सोच-विचार कर आखिर व्यापारी किसी निर्णय पर पहुँचा।

व्यापारी ने अपनी वसीयत लिखने के लिए एक लेखक को बुला लाने के लिए अपने गुलाम को शहर में भेजा। मृत्यु के समय वसीयत आदि लिखने का अभ्यास रखनेवाले एक लेखक ने आकर व्यापारी का वसीयतनामा उसके कहे अनुसार लिखा। उस वसीयत के द्वारा सारी संपत्ति गुलाम के नाम लिखवा कर उसमें यह अंश जोड़ दिया कि व्यापारी का पुत्र अपनी संपत्ति में से कोई एक चाह सकता है। यह उस विचित्र वसीयतनामे का सारांश था।

व्यापारी जल्दी ही बीमारी की वजह से मर गया। उसका गुलाम वसीयतनामा लेकर जेरूसलेम लौट आया। उसने वसीयत के अनुसार सारी संपत्ति पर अपना अधिकार कर लिया।

यहूदी लोककथा

अपने पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर व्यापारी के पुत्र ने सारी संपत्ति उसे सौंपने के लिए गुलाम से पूछा।

गुलाम ने संपत्ति देने से इनकार करते हुए उस लड़के को वसीयतनामा दिखाकर कहा–"यह तुम्हारे पिता का वसीयतनामा है, इसके मुताबिक़ तुम्हारे पिता की सारी संपत्ति मेरे हक़ में आ जाती है, इसमें से कोई एक चीज़ तुम चुनकर ले सकते हो।"

व्यापारी का पुत्र वसीयतनामा को देख आश्चर्य में आ गया। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या किया जाय। आख़िर वह अपने पिता के एक मित्र के पास गया और उसकी सलाह माँगी।

वह वृद्ध बड़ा मेधावी और व्यवहार दक्ष था। उसने लड़के की बातें ध्यान से सुनीं और समझाया–"बेटा, तुम चिंता न करो। इससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं होगा। तुम्हारे पिता ने इस प्रकार का वसीयतनामा लिखवा कर तुम्हारे प्रति बड़ा उपकार किया है। कल तुम अदालत में आ जाओ। गुलाम से कहो कि वह भी वसीयतनामा के साथ न्यायाधिकारी के पास आवे। वहाँ मेरे कहे अनुसार करोगे तो तुम्हारा भला होगा।"

दूसरे दिन सबेरे व्यापारी का बेटा और उसका गुलाम वसीयत के साथ अदालत में पहुँचे। न्यायाधिकारी के सामने वसीयतनामा पढ़ा गया।

न्यायाधीश ने व्यापारी के बेटे से पूछा–"तुमने वसीयतनामा सुना है न? तुम्हारे पिता की संपत्ति में से तुम क्या चाहते हो?"

इस सवाल का जवाब वृद्ध ने पहले ही व्यापारी के लड़के को बताया था, इसलिए व्यापारी के पुत्र ने अपने पिता के गुलाम को दिखा कर कहा–"मैं इस गुलाम को चाहता हूँ।"

न्यायाधीश ने गुलाम को व्यापारी के पुत्र के अधीन किया। इस तरह गुलाम के नाम लिखी गयी सारी संपत्ति व्यापारी के पुत्र के हाथ में आ गयी।

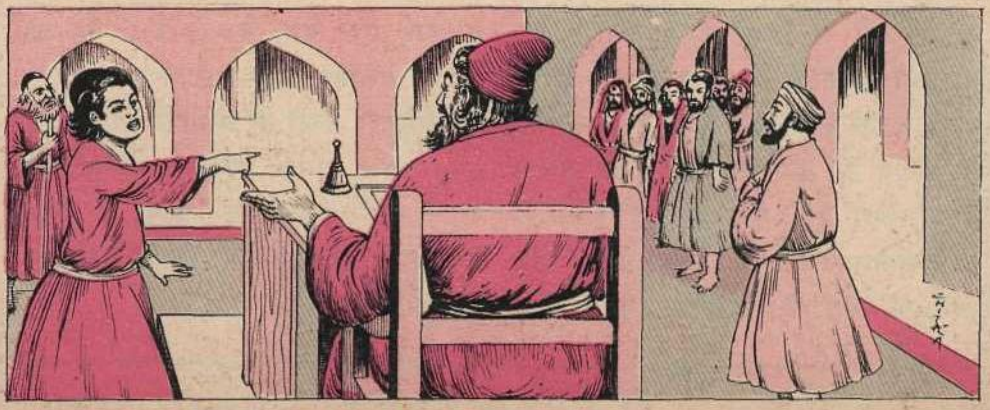

वर की परीक्षा

मालव देश के राजा मतिमंत के एक सुंदर पुत्री थी। उसका नाम चंद्रिका था। राजा ने उस कन्या का बड़े ही लाड़-प्यार से पाला-पोसा और बड़ा किया। मतिमंत पंडितों का अच्छा आदर करता था। साथ ही बड़े विद्वानों के द्वारा चंद्रिका को भी पढ़ाया और लिखाया।

चंद्रिका विवाह के योग्य हो गयी। उसके विवाह के बारे में राजा ने अपने मंत्रियों के साथ सलाह-मशविरा किया। दूतों को भेज कर अनेक देशों के राजकुमारों के चित्र मँगवाये।

उन चित्रों को देखने के बाद चंद्रिका ने राजा से कहा–"पिताजी, इन चित्रों को देखने पर उनकी बुद्धिमत्ता का परिचय हमें कैसे मिलेगा? मुझसे कम बुद्धिमान के साथ मैं कभी विवाह नहीं कर सकती। यदि आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं राजकुमारों की परीक्षा लूँगी, उसमें जो सफल होगा, उसी के साथ मैं शादी करूँगी।"

राजा ने अपने मंत्रियों की सलाह लेकर इस शर्त को स्वीकार किया।

चंद्रिका ने एक श्लोक यों लिख कर राजा के हाथ दिया।

"प्रात र्द्यूत प्रसंगेन,
मध्याह्ने स्त्री प्रसंगतः
रात्रौ चोर प्रसंगेन
कालो गच्छति धीमताम्।"

राजा ने इस श्लोक को सभाभवन में एक शिला पर सुवर्ण अक्षरों में खुदवाया और अपनी पुत्री के स्वयंवर का समाचार सभी देशों में पहुँचा दिया।

यह समाचार सुनते ही एक एक करके अनेक देशों के राजकुमार आने लगे। हर एक ने उक्त श्लोक को पढ़ कर उसका अर्थ यों बताया:

रवीन्द्रकुमार भुवालका

"प्रातःकाल जुए से संबंधित वार्तालाप के द्वारा, दुपहर को स्त्रियों से संबंधित बातचीत तथा रात को चोरों से संबंधित वार्ताओं के द्वारा बुद्धिमान लोग अपना समय बिताते हैं।"

लेकिन चंद्रिका ने उस श्लोक का यह सही अर्थ न मान कर उन सब को भेज दिया। इसके अतिरिक्त उस श्लोक में कौन-सा और अर्थ है, कोई समझ नहीं पाया। राजा और रानी यह सोच कर डरने लगे कि उनकी पुत्री का व्यवहार कुछ असंगत लगता है!

जयसिंह नामक एक युवक ने ये सारी बातें सुनीं; वह बड़ा बुद्धिमान था और राजकुमारी से विवाह करना चाहता था। वह मालव देश के सेनापति का पुत्र था। उसने राजा से अनुमति माँगी कि वह उस श्लोक का अर्थ बतायेगा, इसलिए अनुमति दे। राजा ने मान लिया।

जयसिंह ने राजा और दरबार को संबोधित कर यों कहा:

"इस श्लोक में यह बताया गया है कि बुद्धिमान लोग कैसे अपना समय बिताते हैं। इसलिए श्लोक में बताये गये प्रसंगों का अर्थ बुद्धिमानों के लिए आचरण योग्य होना चाहिए। जुए से संबंधित प्रसंग का अर्थ महाभारत से होता है। वह जुआ न होता तो महाभारत ही नहीं है। इसी प्रकार रामायण स्त्रियों पर आधारित है। कैकेई के वर और सीता का अपहरण—ये प्रसंग न हों तो रामायण ही नहीं है। इसलिए स्त्रियों से संबंधित प्रसंग का मतलब रामायण का प्रसंग है। चोर प्रसंग का अर्थ कृष्ण की कथा है। चोर-विद्या के लिए प्रसिद्ध भगवान का अवतार ही कृष्णावतार है। इस प्रकार अर्थ लगावे तो संपूर्ण श्लोक का अर्थ निकलता है।"

जयसिंह के उत्तर से प्रसन्न हो चंद्रिका ने उसके कंठ में वरमाला डाल दी और उन दोनों का विवाह वैभव के साथ संपन्न हुआ।

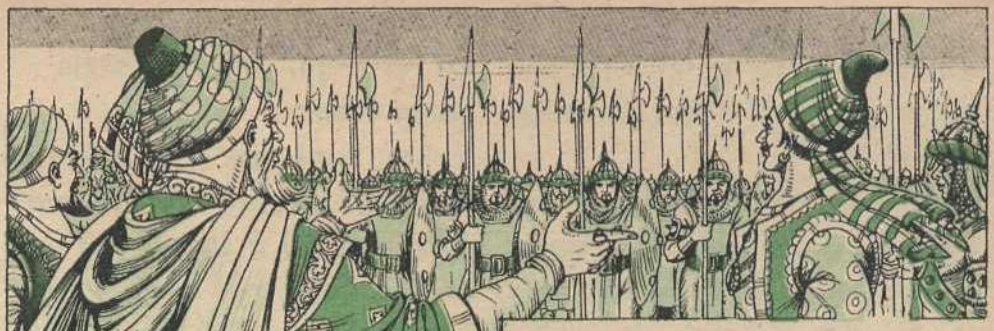

अडन खटोला

[३]

सुलतान का यह विश्वास था कि सवेरा होते ही अपनी फौज के साथ यह अकेले युवक युद्ध करके ज़रूर मर जायगा और उसकी बेटी का अपयश भी दूर होगा। एक खोजा के ज़रिये वज़ीर के पास सुलतान ने यह ख़बर भेजी कि सवेरे तक सारी फौजें लड़ाई के लिए तैयार रहें, तब सुलतान सारी रात शहजादे के साथ बातचीत करता रहा।

सवेरा हुआ। सुलतान ने कमर के वास्ते घुड़साल से एक बढ़िया घोड़ा ले आने का अपने सिपाहियों को हुक्म दिया।

यह बात सुनकर शहजादा कमर ने कहा–"मैं जिस घोड़े पर सवार हो, आपके राज्य में आया हूँ, वही घोड़ा मेरे लिए पर्याप्त है। दूसरे घोड़े की मुझे ज़रूरत नहीं है।"

"अच्छी बात है! तुम्हारी जैसी इच्छा!" सुलतान ने कहा।

तब दोनों मैदान में आ पहुँचे। वहाँ पर सुलतान की फौज क़तारों में सजकर लड़ाई के लिए तैयार खड़ी थी।

सुलतान ने अपने सिपाहियों से कहा–"सिपाहियो, यह युवक मेरी बेटी के साथ शादी करने की इच्छा से हमारे राज्य में आया हुआ है। यह बड़ा ही ख़ूबसूरत जवान है, बड़ा दिलेर और हिम्मतवर है। यह अकेले ही तुम सब को हराने की डींग मारता है। यह भी कहता है कि तुम लोगों की संख्या लाखों की भी क्यों न हो, यह सब को बड़ी आसानी से हरा सकता है। इसलिए यह जब तुम पर हमला करेगा, तब तुम लोग बिना किसी प्रकार के संकोच के इसका सामना कर सकते हो,

अरबी कहानी

तभी इसका घमण्ड चूर हो सकता है। इसलिए तुम सब को सावधान होकर लड़ना होगा।"

तब सुलनान ने कमर से कहा–"बेटा, तुम हिम्मत के साथ लड़कर अपना पराक्रम दिखाओ। ऐसा न हो कि मेरी फौज़ को देखते ही भाग खड़े हो जाओ। तुम्हारी इज्ज़त धूल में मिल जायगी; अपने वचन का तुम्हें ख्याल है न?"

कमर ने सुलतान से कहा–"हुजूर, आप मेरे साथ बेइन्साफ़ करते हैं। मैं पैदल चलते अनेक घुड़सवारों के साथ कैसे लड़ सकता हूँ?"

"मैंने तुम्हें घोड़ा देना चाहा तो तुमने इनकार कर दिया। तुम चाहो तो अब भी वही घोड़ा दूँगा जिसे तुम चाहोगे।" सुलतान ने कहा।

"मुझे आपके घोड़े में से कोई घोड़ा नहीं चाहिये, मैं जिस घोड़े पर सवार होकर आपके देश में आया हूँ, वही घोड़ा मेरे लिए पर्याप्त है।" कमर ने जवाब दिया।

"वह घोड़ा कहाँ पर है? बताओ, मंगवा देता हूँ।" सुलतान ने कहा।

"आपके राजमहल पर है।" कमर ने कहा।

सुलतान अचरज में आ गया और बोल उठा–"मेरे महल पर? अरे बेटा, राजमहल पर घोड़ा कैसे रहेगा? तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, यह साबित करने के

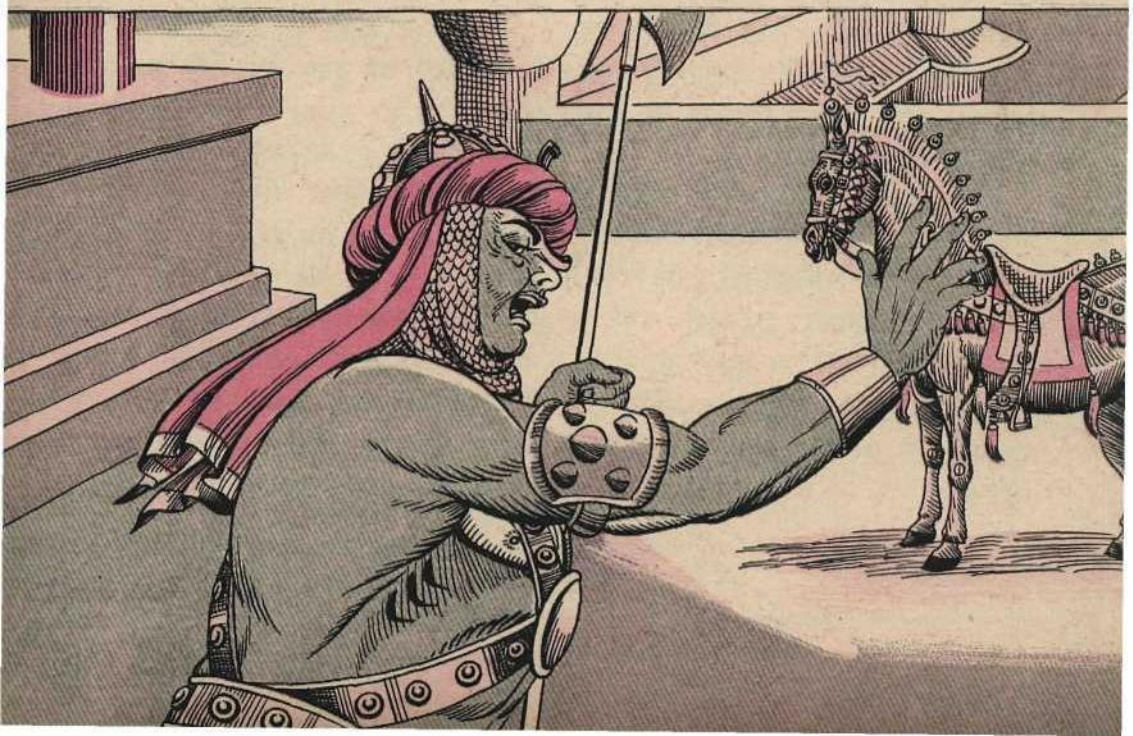

लिए यह एक उदाहरण पर्याप्त है। फिर भी मैं एक आदमी को भेजकर पता लगा लेता हूँ कि तुम्हारा कहना सत्य है कि नहीं।" यों कहकर सेनापति को आदेश दिया–"तुम तुरंत राजमहल पर चले जाओ, वहाँ पर कोई चीज़ दिखाई दे तो उसे लेते आओ।"

कमर की बातें सब सिपाहियों ने सुनीं, वे आपस में चर्चा करने लगे–"घोड़ा इतनी सारी सीढ़ियाँ चढ़कर राजमहल पर कैसे जा सकता है? क्या ऐसी बात कहीं हो सकती है?"

इस बीच सुलतान का सेतापति सीढ़ियाँ पार कर छत पर पहुँचा, वहाँ पर बहुत ही सुंदर घोड़ा देखा। निकट जाकर देखा तो वह लकड़ी और हाथी दांत से बनाया गया घोड़ा था। इस पर सेनापति और उसके साथ गये सिपाही ठठाकर हँस पड़े। वे आपस में कहने लगे–"उस युवक का घोड़ा है यह। सचमुच वह पागल है। फिर भी सच्ची बातें जाने बिना हम कुछ नहीं कह सकते। उठाओ, हम इसे सुलतान के पास ले चलेंगे।"

उन लोगों ने लकड़ी के उस घोड़े को ले जाकर सुलतान के सामने रखा। सुलतान ने अचरज के साथ कमर को देख पूछा–"क्या यही तुम्हारा घोड़ा है?"

"जी हाँ, मैं इसकी अद्‌भुत शक्तियों का आपको परिचय कराऊँगा।" कमर ने जवाब दिया।

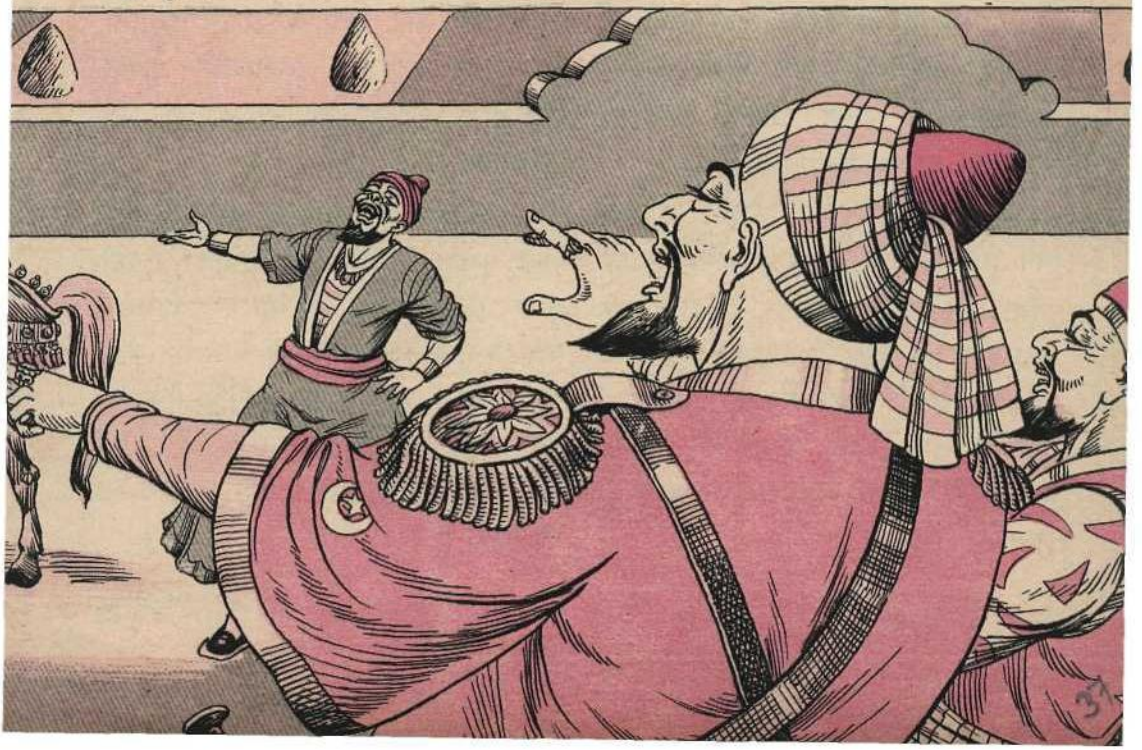

"तब तो सवार हो जाओ।" सुलतात ने कहा।

"ये सिपाही पीछे हट जायें तभी मैं सवार हो जाऊँगा।" कमर ने शर्त रखी।

सुलतान ने अपने निकट रहनेवाले सिपाहियों को दूर भेज दिया।

"हुज़ूर! आप देखते रहिये; मैं इस घोड़े पर सवार हो आपकी फौज पर टूट पड़ूँगा और उसे तितर-बितर करूँगा। उन्हें कंपा दूँगा।" कमर ने कहा।

"तुम अपनी इच्छा के मुताबिक़ करो। उन पर तुम्हें रहम दिखाने की ज़रूरत नहीं, वे भी तुम पर रहम नहीं दिखायेंगे।" सुलतान ने कहा।

तुरंत कमर ने घोड़े की गर्दन पर हाथ डाली, उस पर छलांग मार कर बैठ गया। सिपाहियों ने सोचा कि जब कमर उन पर हमला कर बैठेगा, तब उसे अपने शूलों से चुभो कर ऊपर उठा दे। कुछ सिपाहियों ने सोचा कि ऐसे सुंदर और कोमल व्यक्ति को कैसे मारे? कुछ और सिपाहियों ने सोचा कि यह पागल नहीं है। उसके मन में जीतने की हिम्मत है, इसलिए वह लड़ाई के लिए तैयार हो गया है।

घोड़े पर सवार होते ही कमर ने घुंड़ी दबायी, घोड़े को आगे-पीछे हिलाया। देखते-देखते घोड़े के पेट में हवा भर गयी और घोड़ा तीर से भी ज़्यादा तेज़ी के साथ आसमान में उड़ चला गया।

अचरज और गुस्से में आकर सुलतान चिल्ला पड़ा—"अरे कमबख़्तो! देखते क्या हो? वह भागता जा रहा है, उसे पकड़ लो।"

"जहाँपनाह! उड़नेवाले पक्षी को कौन पकड़ सकता है? वह कोई मामाली आदमी मालूम नहीं होता; कोई मांत्रिक, पिशाच, या भूत होगा। वह यहाँ से भाग कर चला गया, अच्छा हुआ। अल्लाह की मेहर्बानी से हम सब बाल-बाल बच गये। इस पर खुश होने चाहिये।" वज़ीरों ने समझाया।

सुलतान एक दम विस्मय में आ गया। उसने अपने महल में सारी बातें अपनी बेटी को सुनायीं। अपने प्रिय के चले जाने का समाचार सुनकर शहजादी रो पड़ी, चीखते-चिल्लाते वह चारपाई पर गिर गयी।

सुलतान ने उसे ढाढ़स बँधाते हुए कहा–"अरी पगली! रोती क्यों हो? वह कोई जादूगर है, चोर है, बदमाश है। वह हमें किसी तरह के संकट में डाले बिना चला गया है, इसलिए खुशी मनाओ।"

सुलतान ने अपनी बेटी को सांत्वना देने के कई प्रयत्न किये, लेकिन वे सब बेकार गये। उसकी बातों का शहजादी पर कोई असर न पड़ा। वह और जोर से दहाड़े मारकर रोते हुए बोली–"मैं जब तक अपने प्रियतम को न देखूँगी, तब तक मैं खाना-पानी तक न छुऊँगी।"

सुलतान अपनी बेटी के दुख को दूर नहीं कर पाया, उल्टे वह भी दुख में डूब गया। उसे सारी दुनिया अंधकार मय दिखाई देने लगी।

इस बीच शहजादा कमर अपने घोड़े को अपने देश की ओर ले गया। वह भी शहजादी के बारे में सोचते फिर से उससे मिलने का उपाय सोचने लगा। उसे यह बात मालूम हो गयी कि वह यमन देश के सना नामक नगर में उतर पड़ा था, मगर

फिर से उस नगर में कैसे आवे, यह उसकी समझ में न आया।

कमर का उड़न खटोला तेज़ी से चलने वाला होने की वजह से वह जल्द ही अपने नगर में पहुँचा। उसने हवा में नगर के चारों तरफ़ एक बार प्रदक्षिणा की और तब राजमहल की छत पर उतर पड़ा। वह घोड़े को छत पर ही छोड़ कर महल के भीतर गया। सारे कमरों में एक दम शांति छाई हुई थी। सभी कमरों में राख छिड़का दी गयी थी। इसे देख कमर ने सोचा कि राजपरिवार का कोई आदमी मर गया होगा। अपने पिता के कमरे में जाकर देखा। वहाँ पर सुलतान और कमर की बहनें मैले कपड़े पहनकर दुख में डूबी हुए हैं और उनकी आँखें सूझी हुई हैं।

कमर को देखते ही सुलतान झट उठ खड़ा हुआ और ज़ोर से चिल्ला कर बेहोश हो गिर पड़ा। होश में आने पर उसने अपने बेटे से गले लगाया और ख़ुशी के आँसू गिराने लगा।

सब लोग जब स्वस्थ हुए, तब सबने कमर से पूछा कि क्या क्या हुआ है? उसने उन्हें सारी बातें ब्यौरेवार समझायीं।

सारी बातें सुनने के बाद सुलतान ने अल्लाह को शुक्रिया अदा किया। सात दिन तक सारे देश के लोगों को दावतें दीं। इनाम बांटे और सब क़ैदियों को रिहा कर दिया। लोगों को यह बताने के लिए कि शहजादा अभी ज़िंदा है, सुलतान अपने बेटे के साथ घोड़े पर सवार हो सारी राजधानी में घूमने लगे।

जुलूस और उत्सवों के ख़तम होने पर कमर ने अपने बाप से पूछा—"यह अनोखा घोड़ा तैयार करनेवाला बूढ़ा कहाँ?"

"उसके बारे में सोचना ही पाप है। न मालूम किस घड़ी में मैंने उसका चेहरा देखा, तुम मुझसे दूर हो गये। मैंने सभी क़ैदियों को तो रिहा कर दिया, मगर उसे अंधेरी कोठरी में बंद रखा है।" सुलतान ने जवाब दिया।

दुश्मन में फूट

वेंकटगिरि नामक गाँव में वीरबाहू नामक एक किसान था। उसके चार एकड़ जमीन थी। वह कड़ी मेहनत करके फ़सल पैदा करता और उससे होनेवाली आमदनी से जैसे-तैसे अपना परिवार चला लेता था।

एक साल बरसात न होने की वजह से अकाल पड़ा, साथ ही उस प्रदेश में चोरों का बोलबाला हो गया। मगर दूसरे साल अच्छी वर्षा हुई और खेत भी लहलहाने लगे।

वीरबाहू के खेत में ज्वार हरा-भरा था। उसमें भुट्टे निकले आये थे। पिछले साल अकाल पड़ने से चोरों का डर बना रहता था, इसलिए वीरबाहू रात के वक़्त खेत का पहरा देता था। एक दिन की ठण्डी रात में वह अपनी झोंपड़ी में लेटा हुआ था कि खेत में कोई आहट हुई। वीरबाहू ने सोचा कि खेत में चोर घुस आये होंगे। उसने कंबल ओढ़ा, हाथ में लाठी लेकर खेत की ओर चल पड़ा।

थोड़ी दूर पर चार चोर खेत में घुसकर भुट्टे काट रहे थे। चांदनी की रात थी। वीरबाहू ने उन्हें पहचान लिया। वे चारों उसी के गाँव के थे। उसे डर लगा कि अकेले ही चारों का सामना करना जान पर खेलना है।

वह सोच ही रहा था कि उसके दिमाग में एक उपाय सूझा। वह लाठी को वहीं पर छोड़ निडर चोरों के पास पहुँचा।

वीरबाहू के खेत से भुट्टे काटनेवाले चोरों में एक ब्राह्मण, एक बनिया, एक क्षत्रिय और एक किसान था।

वीरबाहू ने पहले ब्राह्मण के निकट पहुँचकर प्रणाम किया और कहा—"ब्राह्मण

नारायण शर्मा

देवता, आपको इस आधी रात के वक़्त यहाँ आकर कष्ट उठाने की क्या ज़रूरत थी? आप किसी से कहला भेजते तो मैं ख़ुद भुट्टे लाकर आपके घर पहुँचा देता, आप जितने चाहे, उतने काट लीजिये। यह सब आपके आशीर्वाद का फल है।"

किसान की बातें सुन ब्राह्मण उछल पड़ा और तेजी के साथ भुट्टे काटने में निमग्न हो गया।

इसके बाद वीरबाहू क्षत्रिय के पास पहुँचा और बोला–"राजा साहब, यह खेत आपका ही है, आप भी जितने चाहे, उतने भुट्टे काट लीजिये। हम तो आपकी प्रजा हैं। यह खेत आपका है।"

क्षत्रिय भी निश्चिंत होकर भुट्टे काटने लगा। तब वीरबाहू बनिये के पास जाकर बोला–"सेठजी, आप मौक़े-बे मौक़े उधार देकर हमें उबारते हैं। इसलिए यहाँ पर आप को रोकने ही वाला कौन है? आप भी मन चाहा भुट्टे काटकर ले जाइये।" इस पर बनिये का डर भी जाता रहा।

वीरबहू तब किसान के पास जाकर बोला–"अरे भाई, इन तीनों को हम-जैसे लोगों को दान देने, कर चुकाने या कर्ज के रूप में धन देना पड़ता है, लेकिन तुम मुझ जैसे एक किसान होकर चोरी करने आये हो, यह बिलकुल ठीक नहीं है, चलो, मेरी माँ के पास! वही इस चोरी का फ़ैसला करेंगी।" यों कहकर उस किसान को वीरबाहू झोंपड़ी के पास खींचकर ले गया। बाक़ी ने सोचा कि वीरबाहू के खेत से भुट्टे काटने का उन्हें हक़ है, लेकिन किसान को नहीं है, इसलिए उन लोगों ने किसान की कोई मदद नहीं की।

वीरबाहू थोड़ी देर बाद लौट आया और ब्राह्मण के निकट जाकर बोला–"महाशय, मेरी माँ कहती हैं कि ब्राह्मण को चाहिये कि दान देने पर ले, पर चोरी करना अपराध है, चलो उनके पास!" यों कहते वीरबाहू ब्राह्मण का हाथ पकड़ कर खींच ले गया।

थोड़ी देर बाद फिर वीरबाहू लौट आया, तब तक बाक़ी दोनों चोर भुट्टे काट रहे थे। इस बार वह बनिये का हाथ पकड़ कर खींचते बोला–"अजी सेठ साहब, मेरी माँ कहती हैं कि आपने हमें कभी कर्ज़ नहीं दिया, इसलिए आपका भुट्टे काटना अपराध है, इसलिए माँ के पास आकर आप ही अपनी सफ़ाई दीजिये।"

बनिये ने क्षत्रिय की ओर याचना भरी दृष्टि से देखा, लेकिन क्षत्रिय ने कुछ नहीं कहा। वह भुट्टे काटने में मशगूल था।

बनिये को झोंपड़ी के पास छोड़ इस बार वीरबाहू लाठी लेकर खेत में आ पहुँचा। तब तक क्षत्रिय भुट्टों की गठरी बांध रहा था। वीरबाहू के हाथ में लाठी देख वह गठरी के साथ तेज़ी से भागने लगा।

वीरबाहू ने क्षत्रिय का पीछा किया और उस पर लाठी चलायी। क्षत्रिय मार खाकर नीचे गिर गया। वीरबाहू ने रस्सी से उसके हाथ बांध दिये और कहा–"तुम्हें तो और लोगों के चोरी करते देख दण्ड देना चाहिये, मगर तुम भी चोरी करने पर तुल गये हो! इसकी सज़ा तुम्हें भागनी है, चलो, तुम्हें भी वही सजा दिलाता हूँ जो सजा बाक़ी तीनों को मिलने वाली है।"

"मुझे भी अपनी माँ के पास ले चलो, बाक़ी तीनों को तुम्हारी माँ ने माफ़ कर दिया तो मुझे भी माफ़ करेंगी।" क्षत्रिय ने कहा।

वीरबाहू ने हँसकर कहा–"भाई, मेरी माँ और कोई नहीं, यही ज़मीन है। उसकी ओर से मैंने तुमको बांध दिया। बाक़ी तीनों को भी मैंने अपनी झोंपड़ी में बांध कर रखा है।"

इसके बाद वीरबाहू ने चिल्ला कर आसपास के खेतों में काम करनेवालों को बुलाया, सारी घटना उन्हें सुनाकर सवेरे होते ही सबको थाने में भिजवा दिया।

फ़िज़ूल खर्ची

बात बहुत पुरानी है। सौरतपुर नामक छोटे गाँव में रामसिंह नामक एक अमीर था। धन खर्च करने में उसका मन नहीं मानता था, यहाँ तक कि वह अपने निजी कामों में भी ज़्यादा धन खर्च न करता था।

एक दिन रामसिंह किसी काम से पड़ोसी गाँव में जा रहा था। रास्ते में उसे खजूर का एक पेड़ दिखाई दिया। उसमें खजूर के गुच्छे लटक रहे थे। रामसिंह को बचपन से ही खजूर ज़्यादा पसंद थे। अब खजूरों को देखते ही उसके मुँह में पानी भर आया। लेकिन वह पेड़ पर चढ़ना जानता न था। फिर भी देखते-देखते खजूरों को छोड़ आगे बढ़ने को भी उसका मन नहीं मानता था, इसलिए जैसे-तैसे तक़लीफ़ उठा कर वह पेड़ पर चढ़ गया।

रामसिंह ने जी भरकर खजूर खाये, थोड़े फल और तोड़कर जेब में डाल लिये। अब पेड़ से उतरने का विचार करके नीचे देखा तो उसे लगा कि जमीन कहीं पाताल की गहराई में है। उसे डर लगा कि आँखें चकराने के कारण वह नीचे गिर जायगा। उसने भगवान से मनौती की–"भगवन, मैं सकुशल नीचे उतर जाऊँगा तो एक हज़ार लोगों को दावत दूँगा।"

मनौती करने के बाद उसकी हिम्मत बंध गयी, वह पेड़ से उतरने लगा, थोड़ा उतरने के बाद उसने नीचे झांक कर देखा तो उसे ख़तरा कुछ कम मालूम हुआ। इसलिए रामसिंह ने मन में सोचा– "एक हज़ार लोगों के लिए भले ही न हो, पांच सौ लोगों को तो दावत देनी पड़ेगी। यह तो भगवान की मनौती ठहरी।"

अनुपम कुमार

थोड़ा और उतरने पर उसे लगा कि पांच सौ लोगों को भी दावत देना बेकार की बात है, सौ लोगों को दावत देना पर्याप्त है। आख़िर वह सकुशल पेड़ से उतर आया और सोचा–"पांच सौ ऐरे-गैरे लोगों को दावत देना एक उत्तम ब्राह्मण को दावत देने के समान है। इसलिए एक उत्तम ब्राह्मण को दावत दूंगा।"

रामसिंह के घर लौटते वक़्त उसके मन में यह विचार आया कि किस ब्राह्मण को दावत दी जाय। मोटे ब्राह्मण तो ज़्यादा खायेंगे, मगर पुजारी रामशास्त्री दुबला-पतला है। वह ज़्यादा खा न सकेगा। इसलिए रामसिंह ने उसी को दावत पर बुलाने का निश्चय किया। रामसिंह सीधे पुजारी रामशास्त्री के घर गया, उसे दूसरे दिन अपने घर दावत पर बुलाया।

कंजूसी के लिए मशहूर रामसिंह का अपने को दावत पर बुलाते देख रामशास्त्री आश्चर्य में आ गया और उसने दावत पर जाने की स्वीकृति दी।

रामसिंह ने तब घर पहुँच कर अपनी पत्नी को सारी बातें सुना कर कहा–"आज मैं जिस काम पर गया था, उसे पूरा किये बिना लौट आया। इसलिए मुझे कल फिर उस काम पर जाना है। मैंने पुजारी रामशास्त्री को दावत पर बुलाया है। सारा इंतज़ाम तुम्हीं कर लो। इस बात का ख़्याल रखो कि ज़्यादा ख़र्च होने न पावे।"

दूसरे दिन सवेरे रामसिंह पड़ोसी गाँव के लिए अपने काम पर चल पड़ा।

दुपहर को ठीक भोजन के वक़्त रामशास्त्री रामसिंह के घर आ पहुँचा। रामसिंह की पत्नी ने पुजारी को खाना परोसा। रामशास्त्री देखने में दुबला-पतला ज़रूर है, मगर ख़ूब खाऊ है। इसलिए तीन आदमी के बराबर का खाना खा लिया। बची मिठाइयों तथा पक्वान्न को बांध कर तांबूल ले लिया। मगर उसमें दक्षिणा न थी।

"माई, दावत देने पर ब्राह्मण को दक्षिणा भी देनी है। इसमें दो सोने की मुद्राएँ रख दो।" रामशास्त्री ने कहा।

लाचार हो रामसिंह की पत्नी ने दो स्वर्ण मुद्राएँ देकर ब्राह्मण को भेज दिया।

इसके दूसरे दिन रामसिंह घर लौट आया। उसकी पत्नी ने रामसिंह को समझाया कि ब्राह्मण को कैसी दावत दी गयी है और कितना खर्च हो गया है। सारा ब्यौरा सुनते ही रामसिंह का कलेजा कांप उठा। उसने अपनी पत्नी को गालियाँ देते हुए कहा–"तुमको बेवकूफ़ बना कर वह बदमाश हमारा घर लूट ले गया है। मैं अभी उसकी खबर लेता हूँ।" यों कहते रामसिंह लाठी लेकर रामशास्त्री के घर चल पड़ा।

रामशास्त्री ने पहले ही अनुमान लगाया था कि ऐसी घटना होगी, इसलिए रामसिंह को अपने घर आने का समाचार पाकर रामशास्त्री चारपाई पर लेट गया। उसकी पत्नी और पुत्र रोने लगे।

रामसिंह के आते ही रामशास्त्री का पुत्र रोनी सूरत बना कर बोला–"आपने यह क्या काम किया? दावत पर बुला कर न मालूम मेरे पिताजी को आपने क्या खिलाया है? घर लौटते ही कै करके इन्हों ने चारपाई पकड़ ली है। वैद्य को दिखाया तो वे बता रहे हैं कि खाने में ज़हर दिया गया है। ज़हर उगलाने के लिए वैद्य चार स्वर्ण मुद्राएँ माँगता है। इस बात का हम फ़ैसला कर लेंगे, चलिये, मुखिये के पास।"

रामसिंह ने सोचा कि मुखिया इलाज के खर्च के साथ जुर्माना भी लगायेगा। इस भय से रामसिंह ने रामशास्त्री के पुत्र से बिनती की–"बेटा, इलाज का खर्च मैं उठाऊँगा, मुझे बचा लो।"

रामशास्त्री के पुत्र ने रामसिंह पर दया दिखाने का अभिनय करते चार स्वर्ण मुद्राएँ लेकर उसे भेज दिया। इसके बाद जब भी रामसिंह खजूरों की याद करता, तब उसका दिल धड़क उठता।

सेठ की युक्ति

एक शहर में शांतिलाल नामक एक व्यापारी था। वह राजा का स्नेहपात्र था, इसलिए प्रति दिन दरबार में हो आया करता था। एक दिन रात को सेठ देरी से घर लौटा। उसने भांप लिया कि अटारी पर चोर बैठा हुआ है। सेठ ने अपनी पत्नी से कहा– "अरी सुनो, शहर में चोरों का बोलबाला हो गया है। तुम अपने सारे गहने उतार कर मेरे हाथ दे दो, मैं उन्हें पेटी में सुरक्षित रखता हूँ।"

सेठ की पत्नी ने अपने पति की बात सच मान ली, उसने अपने सारे गहने उतार कर पति के हाथ दिया। सेठ गहनों को पेटी में रखते चिल्ला उठा–"बाप रे, बाप! बिच्छु ने डंक मार दिया है!"

सेठ की चिल्लाहट सुनकर अड़ोस-पड़ोसवाले दौड़कर आये और पूछने लगे–"क्या हुआ है, सेठ साहब, बताइये?"

"आप सब मेरी चिल्लाहट सुनकर दौड़े आये, मगर देखिये तो अटारी पर बैठा चोर उतर आया कि नहीं।" सेठ ने जवाब दिया। सब ने मिलकर चोर को पकड़ लिया।

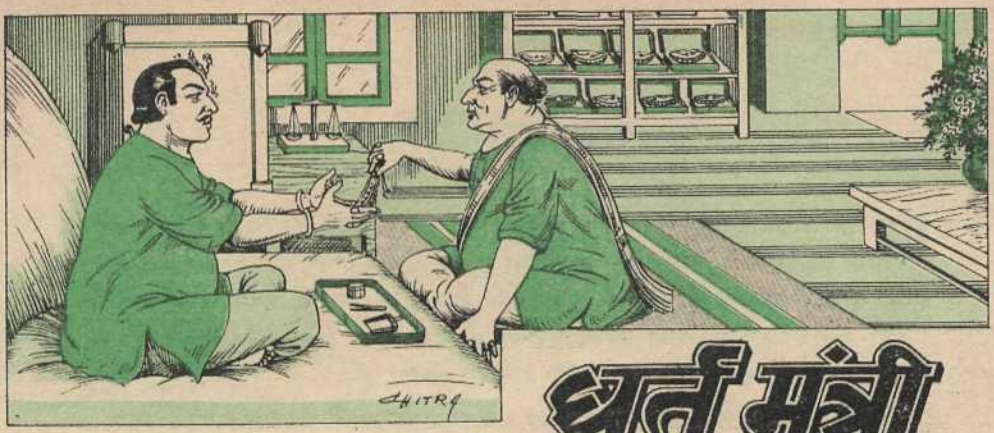

धूर्त मंत्री

धर्मपुर नामक नगर में एक जौहरी था। वह ईमानदार और न्यायाशील था। इसलिए उसके साथ व्यापार में कभी किसी को कोई शिकायत न होती थी। उस पर सबका विश्वास था।

एक दिन एक बुजुर्ग ने जौहरी के पास हीरों की एक माला लाकर उसे पांच सौ सोने के सिक्कों में बिकवाने का अनुरोध किया। जौहरी ने मान लिया।

इसके बाद जो भी जौहरी के पास गहने खरीदने आता, उन सबको जौहरी हीरों की माला दिखाता गया। वह अपनी तरफ़ से उस माला को बिकवाने की हर तरह से कोशिश करने लगा।

एक दिन शेखर नामक एक मंत्री जौहरी के पास किसी काम से आया। उसने हीरक माला देख प्रसन्न हो पूछा– "यह हार आपके पास कैसे आ गया?"

जौहरी जानता था कि मंत्री शेखर अव्वल दर्जे का लोभी, नीच और धूर्त है। फिर भी व्यापारी ने कहा–"एक बुजुर्ग इसे पांच सौ सोने के सिक्कों में बेचने के लिए मेरे पास दे गये हैं।"

"पांच सौ सोने के सिक्के? दाम बहुत ज़्यादा है। चार सौ सिक्कों में हो तो मैं इसे खरीदना चाहता हूँ। क्या चार सौ में दे सकते हो?" शेखर ने पूछा।

"यह नहीं हो सकता, उस बुजुर्ग ने पांच सौ सिक्कों में ही बेचने को कहा है।" जौहरी ने बताया।

"तब तो आप एक बार मेरे घर आ सकते हैं? मेरी पत्नी को यह हार दिखाना चाहता हूँ, अगर उसे यह हार पसंद आया तो मैं इसे पांच सौ सिक्कों में ही खरीद लूँगा।" शेखर ने कहा।

विमला श्रीवास्तव

मंत्री की बात पर विश्वास करके जौहरी अपने साथ हार लेकर मंत्री के पीछे उसके घर पहुँचा।

"आप यह हार मुझे देकर यहीं पर बैठ जाइये। मैं इसे भीतर ले जाकर अपनी पत्नी को दिखा देता हूँ।" यों कहते शेखर ने जौहरी को बरामदे में बिठाया और उसने भीतर जाकर किवाड़ बंद कर लिये।

जौहरी बड़ी सब्रता के साथ घंटों बैठा रहा, लेकिन मंत्री बाहर नहीं आया। जौहरी ने दो-तीन दफ़े दर्वाज़े पर दस्तक दिया, पर किसी ने किवाड़ नहीं खोले। जौहरी ने सोचा कि उसके साथ धोखा हो गया है।

आख़िर भारी दिल को लेकर जौहरी अपने घर लौट आया। उस रात को उसे नींद नहीं आयी। उसकी समझ में नहीं आया कि अगर वे बुज़ुर्ग आकर अपना हार मांगे तो क्या जवाब दे।

दूसरे दिन सवेरे जौहरी मंत्री के घर पहुँचा, मंत्री दरबार में जाने को तैयार था।

"हुज़ूर, आपने हीरे के हार के बारे में क्या निर्णय कर लिया? यदि आप न ख़रीदें तो वापस कर दीजिये, मैं किसी और को बेच दूँगा।" जौहरी ने कहा।

"मेरी समझ में नहीं आता कि आप किस हार के बारे में पूछ रहे हैं?" मंत्री ने आश्चर्य के साथ कहा।

"आपने कल अपनी पत्नी को दिखाने के लिए मेरे हाथ से हीरों का हार लिया था, उसीके बारे में पूछता हूँ।" जौहरी ने बताया।

"यह तुम क्या बकते हो? पागल तो नहीं हुये? ज़्यादा बकवास करोगे तो इसका फल भोगोगे! यहाँ से चले जाओ।" मंत्री ने गरज कर कहा।

जौहरी ने ख़तरे को भाँप लिया। उसने सोचा कि अब मंत्री के हाथ से हार वापस न मिलेगा। वह सीधे न्यायालय में गया

और सारी बातें साफ़ साफ़ न्यायाधीश को बता दीं।

न्यायाधीश जौहरी की ईमानदारी से परिचित था। वह यह भी जानता था कि मंत्री धूर्त है। इसलिए उसने जौहरी की बातों पर विश्वास किया और उसे आश्वासन दिया–"मैं ज़रूर उस हार को वापस दिलाने का अपनी ओर से पूरा प्रयत्न करूँगा।"

दूसरे दिन न्यायाधीश ने अपने घर दावत दी। उसमें सभी राज दरबारियों को निमंत्रण दिया। न्याय-निर्णय के समय जब भी न्यायाधीश इस प्रकार की उलझन में पड़ जाता, तब तब वह इस प्रकार की दावतें देकर प्रमुख व्यक्तियों की सलाहें लिया करता था।

निमंत्रित व्यक्तियों के आने के पहले न्यायाधीश ने अपने नौकर को समझाया–"सुनो, मंत्री शेखर के आते ही तुम उनका एक जूता लेकर उनके घर जाओ। उनकी पत्नी से कहो कि मंत्री साहब सबको हीरों का हार दिखाना चाहते हैं, उसे लाने को मुझे भेज दिया है। यदि वह इसका सबूत मांगेगी तो मंत्री का जूता दिखा दो। यह भी बता दो कि तुम अमुक घर के नौकर हो! वह तुम्हारे हाथ हार दे देगी। मेरे मांगने तक तुम उसे अपने ही पास रखो।" सबके आने पर नौकर बरामदे में गया। मंत्री का एक जूता लेकर उनके घर गया। अपने मालिक के कहे अनुसार मंत्री की पत्नी से बता कर हीरों का हार ले आया।

सब अतिथियों के चले जाने के बाद न्यायाधीश ने अपने नौकर के हाथ से हीरों का हार ले लिया, जौहरी को बुलवा कर उसका हार लौटाते हुए कहा–"धोखे से लिये गये हार को धोखे से ही मंगवाना पड़ा।"

हीरों के हार को देखते ही जौहरी की जान में जान आ गयी। जौहरी न्यायाधीश के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर बड़ी प्रसन्नता के साथ अपने घर लौट गया।

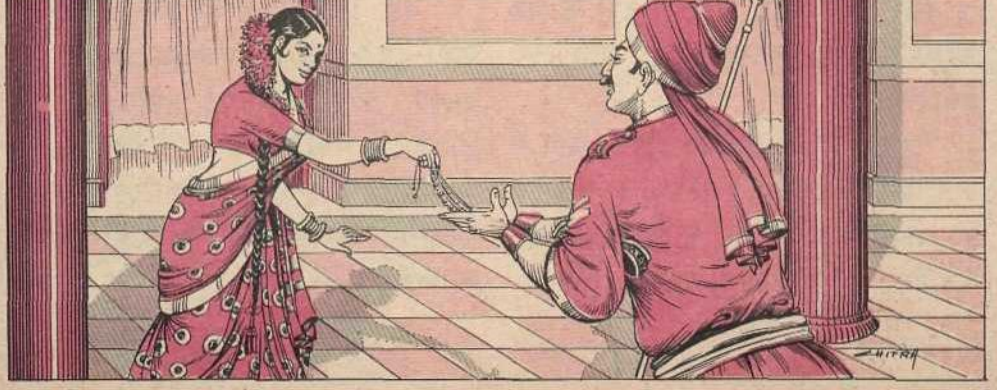

धृतराष्ट्र को जब मालूम हुआ कि कृष्ण हस्तिनापुर में पधार रहे हैं, तब उसने भीष्म, द्रोण, संजय, विदुर, दुर्योधन तथा उसके मंत्रियों को बुलवा कर कहा–"सुनने में आया है कि कृष्ण हस्तिनापुर में आ रहे हैं, यह समाचार नगर के लोगों में बड़ी सनसनी पैदा कर चुका है। मार्ग में उनके लिए सब प्रकार की सुविधाओं का प्रबंध करो। अनेक प्रकार से उनका सत्कार करो।"

दुर्योधन ने हस्तिनापुर से वृकस्थल तक सारे रास्ते को अलंकृत कराया, जहाँ-तहाँ मण्डप बनवाये। कृष्ण उन मण्डपों तथा अलंकारों को देखते हस्तिनापुर पहुँचे। दुर्योधन को छोड़ उनके सभी भाइयों, भीष्म, द्रोण इत्यादि रथों पर सवार हो उनकी अगवानी के लिए चल पड़े।

कृष्ण धृतराष्ट्र के महल के सामने अपने रथ से उतर पड़े, पैदल ही चल कर तीन कक्षों को पार किया, तब जाकर धृतराष्ट्र की सभा में प्रवेश किया। कृष्ण के प्रवेश करते ही धृतराष्ट्र के साथ सभी लोग उठ खड़े हुए। कृष्ण ने सर्व प्रथम भीष्म तथा धृतराष्ट्र के कुशल प्रश्न पूछे, इसके बाद अन्य सभी राजाओं का उचित रूप में परामर्श किया। कृष्ण के बैठने के लिए धृतराष्ट्र ने सोने का आसन मंगवाया। कृष्ण ने वहाँ पर अतिथि-सत्कार पाने के बाद सबसे बातें कीं, तब वहाँ से विदुर के घर चल गये।

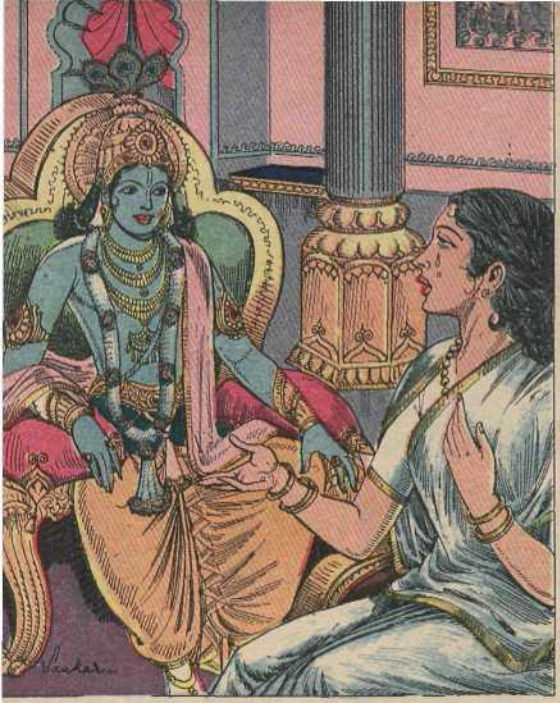

उस दिन दुपहर को कृष्ण कुंती देवी को देखने उसके घर गये। कुंती देवी कृष्ण से गले लग कर अपने पुत्रों की याद करके रो पड़ी। फिर एक उत्तम आसन पर बिठा कर बोली–"कृष्ण, मेरे पुत्र मुझे यहाँ छोड़ वनवास में गये। मेरा शरीर यहाँ ज़रूर है, मगर मेरा मन उनके साथ ही है। पितृविहीन उन बच्चों को मैंने बड़े ही लाड़-प्यार से पाला। न मालूम भयंकर जंगलों में उन लोगों ने अपने दिन कैसे काटे? युधिष्ठिर धर्म के असहनीय बोझ को उठा रहा है। वह कैसा है? भीम, अर्जुन कुशल हैं न? सहदेव कैसा है? वह सब तरह से मेरी सेवा किया करता था। नकुल को फिर से देख सकती हूँ? मेरे पुत्रों से भी अधिक प्यारी द्रौपदी कैसी है? यदि ऐसी अच्छी औरत ने कष्ट भोगे तो मैं कैसे विश्वास कर सकती हूँ कि पुण्यात्मा भी सुखी हो सकते हैं?"

कृष्ण ने कुंती देवी को सांत्वना देते हुए कहा–"तुम अपने पुत्र और बहू को देख सकोगी! वे अपने शत्रुओं को हरा कर तुम्हारे पास आ जायेंगे।" इसके बाद वह कुंती देवी के यहाँ विदा लेकर दुर्योधन के पास चले गये।

दुर्योधन का महल इन्द्रभवन जैसा था। उसकी पहली मंजिल पर वह एक रत्न खचित सिंहासन पर बैठा था। उसके पास ही दुश्शासन, कर्ण और शकुनि बैठे थे। वहाँ पर कौरव तथा अन्य राजा उपस्थित थे। कृष्ण को देखते ही सब लोग आदरपूर्वक उठ खड़े हुए। कृष्ण ने सबका उचित रूप से परामर्श किया और एक विशेष आसन पर बैठ गये।

दुर्योधन ने अपना आतिथ्य स्वीकार करने का कृष्ण से निवेदन किया, मगर कृष्ण ने अस्वीकार किया। इस पर दुर्योधन ने कृष्ण से पूछा–"आपने हमारे दोनों पक्षों की सहायता की है। ऐसी हालत में हम प्रेम के साथ जो आतिथ्य दे रहे हैं, उसे इनकार क्यों करते हैं?"

"मैं दूत बन कर आया हूँ। मेरा दूत-कार्य सफल हुआ तो मैं अवश्य तुम्हारे आतिथ्य को स्वीकार करूँगा।" कृष्ण ने उत्तर दिया।

"हमारे बारे में आप संकोच मत कीजिये। आप जिस कार्य पर आये हैं, वह सफल हो या न हो, आपको आतिथ्य देना हमारा कर्तव्य है, इसे स्वीकार करना ही होगा।" दुर्योधन ने ज़ोर दिया।

इस पर कृष्ण ने हँस कर कहा– "दुर्योधन, प्रियजनों के साथ तथा विपत्ति के समय भी भोजन किया जा सकता है। हम जानते हैं कि हमारे प्रति तुम्हारे मन में प्रेम नहीं है और न मैं विपत्ति में ही हूँ। हमारे और तुम्हारे बीच शत्रुता है, इसलिए तुमको हमें आतिथ्य नहीं देना चाहिये और न हमें तुम्हारे आतिथ्य को स्वीकार करना है। तुम पांडवों से आकारण शत्रुता रखते हो। वे लोग तो मेरे लिए प्राण-समान हैं। किसीने भी यह नहीं बताया कि उनके द्वारा एक भी अधर्म कार्य हुआ है। यदि तुम उनसे द्वेष करते हो तो इसका तात्पर्य है कि तुम मुझसे भी द्वेष करते हो। इसलिए तुम मुझ पर ज़ोर मत डालो।" यों समझा कर उठ खड़े हुए और द्रोण, कृप, भीष्म इत्यादि के साथ विदुर के घर चले गये।

अपने साथ आये हुए सभी लोगों को कृष्ण ने अपने अपने घर भेज दिये, तब उन्होंने विदुर के यहाँ भोजन किया। भोजनोपरांत कृष्ण से विदुर ने कहा– "कृष्ण, मुझे लगता है कि आपका यहाँ आना अच्छा नहीं है। दुर्योधन ने सभी प्रकार के धर्मों का अतिक्रमण किया है। वह केवल युद्ध चाहता है, शांति नहीं। कर्ण मानता है कि वही अकेले पांडवों की सारी सेनाओं को जीत लेगा, इसीलिए वह संधि के लिए तैयार नहीं होगा। दुर्योधन के पास सैन्य-बल भी ज़्यादा है। इस कारण आप उन लोगों को जो भी हित की बातें बतायें, वे उनके दिमाग में घुसेंगी

नहीं। साथ ही दुर्योधन की सहायता करने आये हुए राजाओं में आपके अनेक शत्रु भी हैं। उनके बीच आपका जाना मुझे कतई पसंद नहीं है। आपके प्रति मेरे मन में गहरा स्नेहभाव है। इसलिए मैं ये बातें आपसे कह रहा हूँ। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मैं आपके पौरुष तथा प्रभाव से अपरिचित हूँ। आपको देखने पर मुझे जो संतोष हुआ, उसे मैं शब्दों में प्रकट नहीं कर सकता।"

इस पर कृष्ण ने विदुर से कहा– "आपने सच्ची बात बतायी, मैंने पहले ही इस बात का अंदाज़ लगाया था, फिर भी शांति स्थापित करने के लिए भर सक कोशिश करके, दोनों पक्षों के नाश होने से बचाना मेरा कर्तव्य है। वरना लोग सोचेंगे कि सर्वनाश के होते देखकर भी कृष्ण चुप रह गये। मुझे तो किसी प्रकार का डर नहीं है।" इसके बाद कृष्ण ने वह रात विदुर के यहाँ ही बितायी।

दूसरे दिन सवेरे कृष्ण नींद से जाग उठे। कालकृत्य सामाप्त कर संध्यावंदन कर रहे थे, तभी दुर्योधन तथा शकुनि ने आकर बताया कि धृतराष्ट्र सभाभवन में कृष्ण की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

इतने में कृष्ण के सारथी दारुक ने बताया कि रथ तैयार है। कृष्ण अपने रथ में विदुर को बिठा कर चल पड़े। दुर्योधन और शकुनि अपने-अपने रथों पर निकल पड़े। उनके पीछे अनेक राजा हाथी और घोड़ों पर निकले। उनके पीछे अनेक नागरिक भी उस जुलूस में शामिल हो गये। इस प्रकार राजपथ पर कृष्ण को जुलूस में जाते नारियों, बच्चों और बूढ़ों ने भी मार्ग के दोनों ओर खड़े होकर देखा।

सभाभवन के द्वार पर कृष्ण अपने रथ से उतर पड़े। सात्यकी और विदुर के हाथ पकड़े सभा में प्रवेश किया। कृष्ण के पीछे कृतवर्मा इत्यादि ने सभाभवन में प्रवेश किया। सभासदों ने कृष्ण के प्रति उचित रूप से आदर भाव दिखाया। तब कृष्ण

Shankar

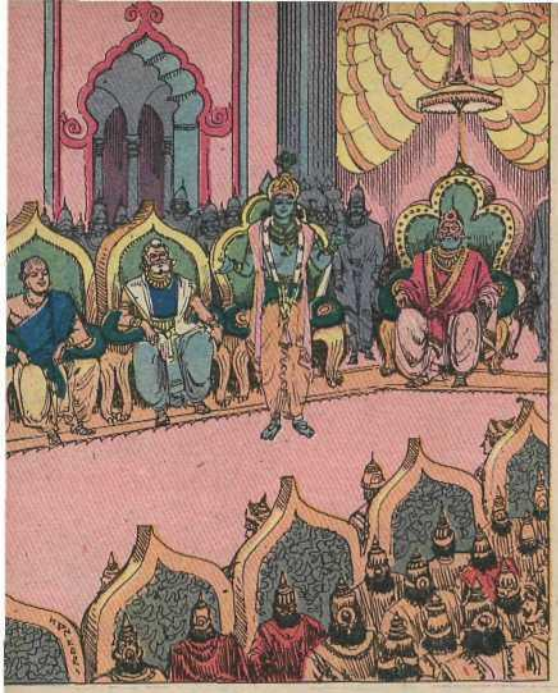

अपने लिये तैयार रखे एक सुंदर आसन पर बैठ गये। विदुर कृष्ण के बगल में एक और आसन पर बैठ गये।

सभाभवन में शांति छायी हुई थी। कृष्ण ने धृतराष्ट्र को संबोधित कर यों कहा–"राजन, भरत वंश के वीरों के नाश होने से बचाने के लिए कौरव तथा पांडवों के बीच शांति स्थापित करने के लिए मैं आपसे याचना करने यहाँ पर आया हुआ हूँ। इसके लिए उचित उपायों का आपको परिचय कराने की ज़रूरत नहीं है। समस्त राजवंशों की आग्रश्रेणी में कुरु वंश है। आप कौरव वंश के प्रमुख हैं। चाहे जो भी कोई अपराध करे तो आप उसे दण्ड दे सकते हैं। दुर्योधन आदि आपके पुत्र धर्म, अर्थ इत्यादि को छोड़ अनेक दुष्ट कार्य कर रहे हैं। यह बात आपको पहले जान लेनी है। भविष्य में होनेवाले ख़तरे के कारणभूत कौरव ही है। यदि आप इस ख़तरे को नहीं रोकेंगे तो इस पृथ्वी पर निवास करने वाली सारी जनता का विनाश होगा। इस ख़तरे को टालने की शक्ति आप में है। मेरा विश्वास है कि कौरव और पांडवों के बीच शांति पैदा करना कोई कठिन कार्य नहीं है। यह काम तों आपके और मेरे हाथों में है। आप अपने पुत्रों को अच्छे मार्ग पर लाइये। मैं पांडवों के क्रोध को शांत करूँगा। आपके पुत्र तथा आपके समर्थकों को शासित करने का अधिकार आपको है। इस प्रकार कौरव और पांडवों के बीच संधि स्थापित कीजिये। पांडवों को कोई जीत नहीं सकता। उनका समर्थन आपको प्राप्त हो जाय तो आपकी ओर कोई आँख उठा कर भी देख नहीं सकता। तब आप सारे विश्व पर अधिकार चला सकते हैं। पांडवों के साथ संधि करना आपके लिए ही अधिक लाभदायक है। युद्ध में चाहे पांडव हार जाय या आपके पुत्र, तो आपको क्या सुख प्राप्त होगा? यदि

युद्ध हुआ तो सारे संसार के राजा उसमें भाग लेंगे और उसमें सब लोग मर जायेंगे। इसलिए इस संसार की रक्षा करने की जिम्मेदारी आपके हाथ में है। इसलिए ऐसा कीजिये कि यहाँ पर उपस्थित सभी राजा एक पंक्ति में भोजन करके अपने अपने राज्य को लौट जाय। आप ही पांडवों के संरक्षक हैं। इस कठिन स्थित में यदि आप उनका हित नहीं सोचेंगे तो और कौन सोचेगा? यही बात पांडवों ने आपसे बताने को कहा है। इस सभा में उपस्थित लोगों से एक बात बताने का पांडवों ने अनुरोध किया है। वह यह कि जिस सभा में अन्यायपूर्ण निर्णय होगा, उस अन्याय के द्वारा होनेवाले पाप का वे भी भागी होंगे। इसलिए सभासदों का भी यह कर्तव्य है कि वे धर्म और न्याय का ही निर्णय करें। इन सभी राजाओं को मौत से बचाइये। पांडवों को न्यायपूर्वक उनके पिता का राज्य वापस कर दीजिये। आप जानते हैं कि युधिष्ठिर कैसे व्यक्ति हैं? लाख का गृह जलाने पर भी वे फिर आपके पास आये थे। आपने उनको इन्द्रप्रस्थ में भेज दिया, तब भी वे चुपचाप चले गये। शकुनि की माया के द्वारा आपके पुत्र दुर्योधन ने पांडवों का सर्वस्व छीन लिया, तब भी उन्होंने सहन

किया। मैं आपके तथा पांडवों के हित की कामना से कहता हूँ कि आप अपने पुत्रों पर नियंत्रण रखिये। पांडव आपकी सेवा करने तथा आवश्यकता पड़ने पर युद्ध करने के लिए भी तैयार बैठे हैं। इसलिए आप जो उचित समझें, वही कीजिये।"

कृष्ण के बोलने के बाद सभाभवन में सब लोग मौन रह गये। किसीने कोई जवाब नहीं दिया। इसलिए सब लोग आश्चर्य में आ गये। तब परशुराम ने धृतराष्ट्र से कहा–"राजन, आपको मैं एक नीतिपूर्ण वचन सुनाता हूँ। यदि वह आपको पसंद आये तो उसका पालन कीजिये।"

इसके बाद परशुराम ने यों कहा :

प्राचीन काल में दंभोद्भव नामक एक राजा था। वह प्रति दिन चारों वर्णवालों को बुलाकर पूछता–"क्या तुम में से कोई मुझे जीत सकता है?" ब्राह्मणों ने उसे सलाह दी कि ऐसी आत्म स्तुति उचित नहीं है, फिर भी राजा अपनी आदत से मजबूर था।

आख़िर ब्राह्मण उस राजा से ऊब गये और बोले–"राजन, नर और नारायण नामक दो ऋषि हैं। वे दोनों सब को जीत सकते हैं। वे गंधमादन पर्वत पर तपस्या किया करते हैं। यदि तुम युद्ध करने का उत्साह रखते हो तो उनके पास चले जाओ।

इस पर दंभोद्भव आपनी सेनाओं को साथ ले गंधमादन पर्वत पर पहुँचा। नर-नारायण ने उसे आतिथ्य देना चाहा, तो उसने युद्ध का आतिथ्य माँगा। नर-नारायण ने उसे समझाया कि यह प्रदेश युद्ध करने योग्य नहीं है, फिर भी राजा ने नहीं माना।

तब नर नामक महा ऋषि ने क्रुद्ध होकर दाभों का मंत्र करके राजा तथा उसकी सेना पर फेंक दिया। उस दाभोंवाले अस्त्र को देख उसकी सेनाएँ आश्चर्य में आ गयीं। इस पर दंभोद्भव ने नर के पैरों पर गिर कर क्षमा माँगी।

"तुम आइंदा डींग मारना छोड़ प्रजा को अपनी संतान मान कर शासन करो।" यों समझा कर नर और नारायण ने उसे भेज दिया।

परशुराम ने यह कहानी सुना कर कहा–"हे धृतराष्ट्र, केवल अकेले नर ने ही यह काम किया था, नारायण तो नर से कहीं अधिक शक्तिशाली हैं। वे ही नर और नारायण अर्जुन और कृष्ण हैं। इसलिए अर्जुन का गांडीव पर बाण चढ़ाने के पूर्व ही अपने गर्व को छोड़ उनकी शरण में जाइये। कृष्ण की सहायता प्राप्त अर्जुन को युद्ध क्षेत्र में पराजित करना असंभव है। इसलिए युद्ध की बात भूल कर पांडवों के साथ संधि कर लीजिये।"

शिव-लीलाएँ

[३]

हिमालयों से सटकर दारुकावन है, जो ऊँचे देवदार वृक्षों, बर्फ़ से भरे प्रपातों से अत्यंत सुंदर है। उसमें एक ज़माने में भृगु, मरीची, अंगीरस, इत्यादि बड़े-बड़े महान ऋषि आश्रम बना कर तपस्या और यज्ञ करते हुए अपनी पत्नयों के साथ रहा करते थे।

ऋषि अपनी तपस्या के बल पर घमण्ड हो यह कहा करते थे कि उनकी तपस्या के बल के कारण ही अत्यंत रूपवती उनकी पत्नियाँ महा पतिव्रताएँ बनी हुई हैं, यदि कोई पराये पुरुष उनके समीप जाते हैं तो वे भस्म हो जाते हैं, यहाँ तक कि त्रिमूर्ति भी उनकी तपस्या के सामने ठहर नहीं सकते। यह बात नारद ने पार्वती और शिवजी के कान में डाल दी।

एक बार एक महायज्ञ करने के निमित्ति ऋषि अपनी पत्नियों को घर पर छोड़ चले गये। यह मौक़ा पाकर शिवजी सम्मोहन रूप धारण कर एक हाथ में भांग, महुए का सुरा-पात्र तथा दूसरे हाथ में भिक्षा-पात्र को लेकर उन्मत्त की भांति लोटते दारुकावन में पहुँचे और भिक्षा माँगने लगे। ऋषियों की पत्नियाँ उन्हें देख मोहित हो गयीं और दारुकावन में खेलते-गाते विहार करने लगीं।

उस वक़्त नारद ऋषियों के पास जाकर बोला–"उधर एक भिक्षुक आपके परिवारों को लूट रहा है।" तब सभी ऋषि दारुकावन में दौड़ पड़े। तारों के बीच चन्द्रमा जैसे रहनेवाले शिवजी को देख क्रोध में आकर गरज उठे–"तुम कौन हो?"

अंतिम पृष्ठ का चित्र

"मेरा नाम चिदंबर सुंदरेश्वर है।" भिक्षुक ने जवाब दिया।

"यह तुम क्या करते हो?" ऋषियों ने पूछा।

इसके जवाब में सुरापात्र तथा भिक्षापात्र को दिखाते शिवजी बोले–"जिसके कोई काम नहीं, उन्हें किसी न किसी काम में प्रवृत्त करना ही मेरा काम है।"

"अरे, तुम्हारा पुरुषत्व मिट्टी में मिल जाय।" ऋषियों ने यों शाप दिया।

"यह मेरे लिए कोई नई बात नहीं है।" शिवजी ने यों परिहास किया।

इस पर ऋषियों ने अभिचार होम करके होमकुंड से 'माया' नामक अंधकार फैलानेवाले कृत्याभूत की सृष्टि करके शिवजी पर भेज दिया। शिवजी ने उस माया को अपने दायें पैर के नीचे दबाया और बाया पैर उठा कर नाचने लगे।

इसके बाद ऋषियों ने 'भय' नामक एक बाघ को होमकुण्ड से पैदा किया और उसे भी शिवजी पर छोड़ दिया। शिवजी ने बाघ को फाड़ दिया और उसके चमड़े को अपनी कमर में बांध लिया।

तब ऋषियों ने 'महा पाप' नामक विष सर्प को शिवजी पर फेंक दिया।

शिवजी ने उस सर्प को अपने भूषण के रूप में धारण किया।

तब ऋषियों ने 'चित्त चंचल' नामक एक सम्मोहनकारी विद्या का मंत्रोच्छारण करके शिवजी पर प्रयोग किया।

शिवजी ने उसे एक हिरण का शावक बना कर अपनी मुट्ठी में बंद कर रखा। ऋषियों ने खीझ कर शिवजी पर प्रलय काल की अग्नि फेंक दी।

शिवजी ने उस अग्नि को फूल के गुच्छे के रूप में पकड़ लिया।

तब भी ऋषि शिवजी को समझ न पाये। उन लोगों ने शिवजी पर महा ज्वालाएँ फेंक दीं, पर वे ज्वालाएँ शिवजी के चारों तरफ़ वृत्ताकार में तोरण बन कर रह गयीं।

शिवजी इस प्रकार माया का मर्दन करके नृत्य करने लगे, उसे देखने के लिए विघ्नेश्वर, कुमारस्वामी, नंदी, भृंगी इत्यादि प्रमद गणों को साथ ले पार्वती आ पहुँचीं। जगदांबा पार्वती के सामने शिवजी के नृत्य करते देख सभी देवता वहाँ पर आ पहुँचे।

विष्णु राग सहित मृदंग बजाने लगे, सरस्वती वीणा बजाने लगी, इंद्र वेणु बजाने लगा। ब्रह्मा ताल देने लगा। ऋषि सब अपनी गलती को समझ कर सामवेद का पाठ करने लगे, तो नारद ने देवगांधार का गान किया। नंदीश्वर ने भेरी बजायी, कुमारस्वामी ने तूर्यनाद किया। भृंगीश्वर ने डमरू बजाया। उस वक़्त शिव-तांडव को देख विघ्नेश्वर में उत्साह पैदा हो गया तो वह भी नाचने लगा। उसकी देखादेखी उसका वाहन चूहा भी नाच उठा।

नृत्य शिव, राग विष्णु तथा लय ब्रह्मा के द्वारा जगत-लीला नृत्य के रूप में

शिव लीला के होते देख भरत मुनि ने नटराज शिवजी को नृत्य देवता के रूप में 'भरत शास्त्र' नाम से नाट्य वेद की रचना की।

व्याघ्रपाद नामक मुनि के उपमन्यु एक पुत्र था। पांच वर्ष की अवस्था में ही उस बच्चे को यह मालूम हो गया कि उसका परिवार दरिद्र है। वह जंगल में जाकर पंचाक्षरी मंत्र का जाप करते शिवजी के प्रति तपस्या करने लगा।

शिव और पार्वती विकृत रूप में उपमन्यु के सामने आकर बोले–"बेटा, इस जंगल में शेर और बाघ होंगे। तुम घर चले जाओ।"

"शिव पंचाक्षरी के होते मुझे किसी तरह का डर नहीं है।" उपमन्यु ने उत्तर दिया। इस पर पार्वती और परमेश्वर ने प्रसन्न होकर उसे समस्त प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान किये।

गयासुर नामक दानव तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करके कैलास पर टूट पड़ा। इस पर शिवजी ने अपने जटाजूट को झाड़ दिया। तब उसमें से भयंकर मुख वाला एक विशाल काय व्यक्ति पैदा होकर दानव को निगलने दौड़ पड़ा। गय भय के मारे कांप उठा और शिवजी की शरण में आया। शिवजी ने उसे अभय प्रदान किया।

भयंकर मुखवाला विवश हो चिल्लाने लगा–"मुझे खाना चाहिये।" शिवजी ने उसे आदेश दिया–"तुम अपना ही शरीर खाकर भूख मिटा लो।" शिवजी का आदेश स्वीकार करके भयंकर मुखी अपने शरीर को खा गया, अब सिर्फ़ उसका मुख बच गया था। इस पर शिवजी ने प्रसन्न हो उसका नाम 'कीर्ति मुख' रखा और उसे यह वरदान दिया–"अरे कीर्ति मुख, तुम सभी देवताओं के सरों पर खड़े हो उन्हें कीर्ति प्रदान करोगे।"

इस प्रकार शिवजी का अंश कीर्तिमुख के रूप में मकर तोरण के बीच प्रत्येक देवता के सर पर सुशोभित है।

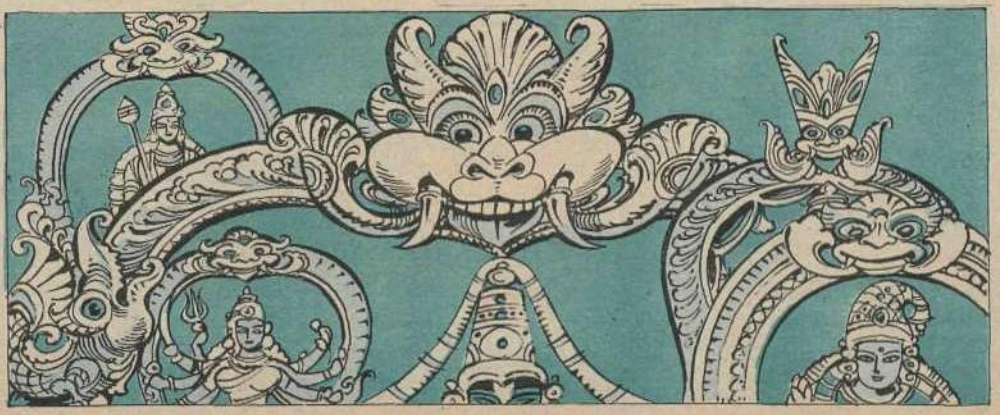

१३५. नवछत्र

फनोमपेन (कांबोडिया) के राजमहल में स्थित इस सिंहासन पर नौ छत्र हैं। कांबोडिया के राजाओं का राज्याभिषेक यहीं पर होता है। विदेशों के राजदूत यहीं पर राजा से मिलते थे। इस सिंहासन के सामने स्त्रियाँ नहीं आ सकतीं। राजा को देखने के लिए महिलाओं के लिए इस सिंहासन के पीछे एक और कक्ष था।

Photo by Sambhu Mukherjee

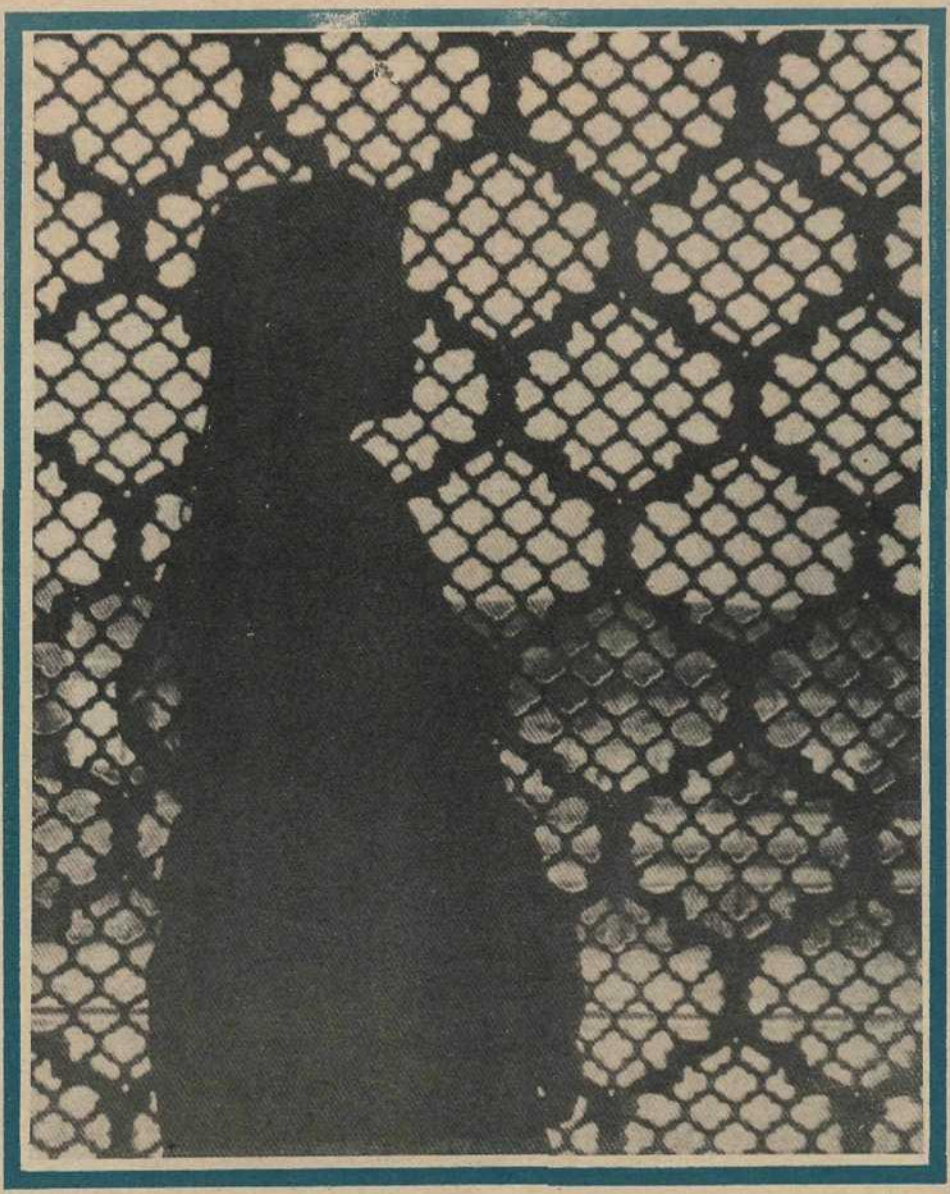

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

खड़ी हूँ आस लगाये !

प्रेषक :
श्रीरामगुप्त

Photo by Sambhu Mukherjee

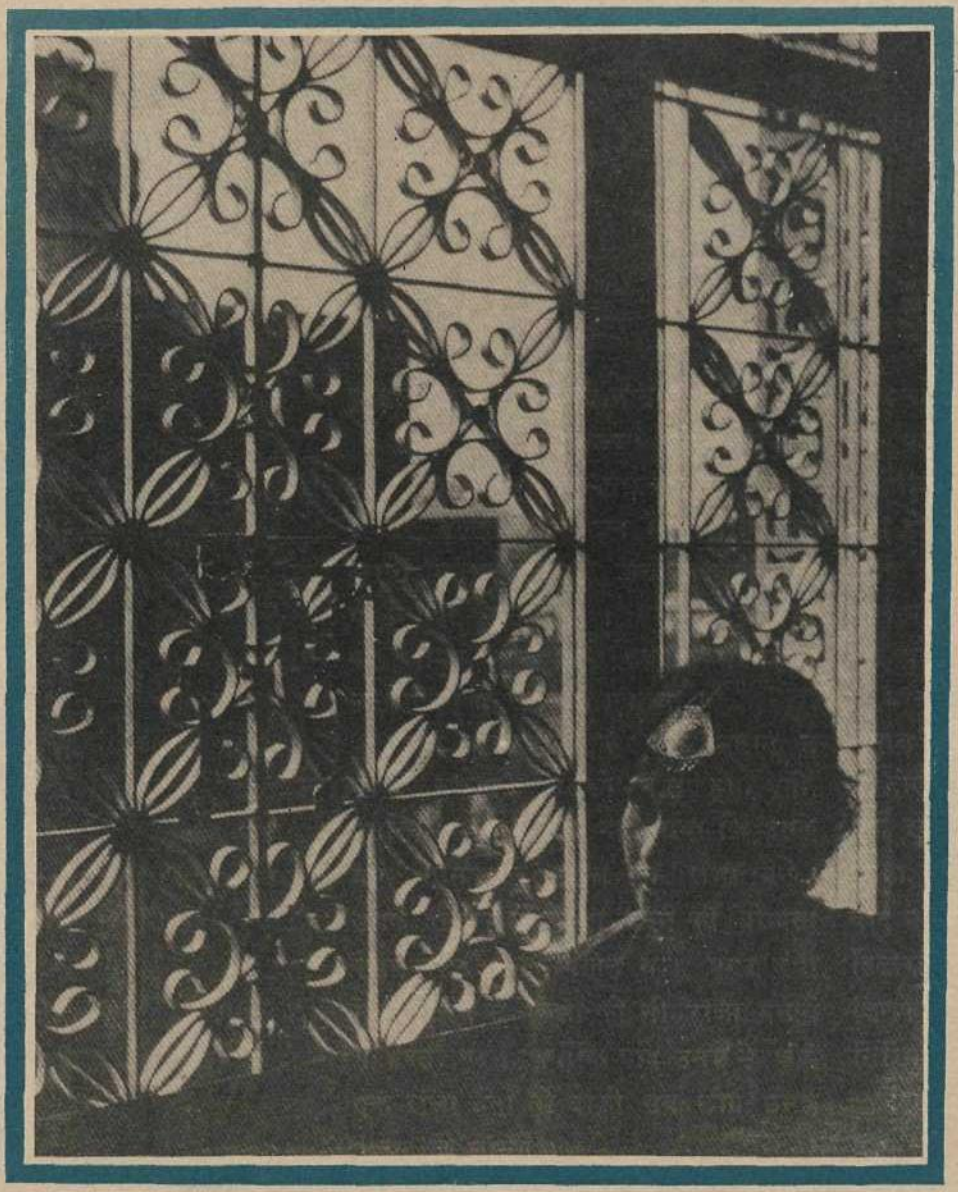

बंगारमाऊ
जि. उन्नाव (उ. प्र.)

अभी न प्रीतम आये !!

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ अप्रैल ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जून के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

पट्ट हाथी	...	३	उड़न खटोला	...	३१
अंधेरे में दावत	...	७	दुश्मन में फूट	...	३९
यक्ष पर्वत	...	९	फिजूल खर्च	...	४२
गरीब का दंभ	...	१७	धूर्त मंत्री	...	४६
कंजूस-सौदागर	...	२३	महाभारत	...	४९
वसीयतनामा	...	२७	शिव-लीलाएँ	...	५७

श्रीरामनवमी के उत्सव

दूसरा मुखपृष्ठ: **हनुमान**

तीसरा मुखपृष्ठ: **राक्षस**

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

और हंसते हंसते
लोट पोट
हो जाइए

हर अंक के साथ 25 से 40 पैसे
तक के मूल्य का उपहार मुफ़्त

मूल्य प्रति अंक 70 पैसे

लोटपोट, ए-5 मायापुरी, नई देहली-27

अपनी रक्षा आप...

डैडी, सुनील ने आज सवेरे मुझे मारा

तुमने वापिस क्यों नहीं मारा? अपनी रक्षा आप करना सीखो!

देखो, घूँसे से बचने के लिए या तो पीछे या आगे हट जाओ या ऐसे झुक जाओ कि वार खाली जाए।

घूँसे को कलाई पर भी रोक सकते हो।

या उसे भुजा या कन्धे पर भी झेल सकते हो।

हाँ ऐसे! 'ब्लॉकिंग' यानी अपनी रक्षा आप करने का यह तुम्हारा पहला सबक है।

बाप रे, बड़ी देर हो गयी। चलो सो जाएँ। रोहित, तुमने दाँत तो साफ़ कर लिए हैं न?

डैडी, मैं रोज़ सवेरे तो करता हूँ।

नहीं बेटे, ऐसे नहीं चलेगा। तुम्हें अपने दाँत हर रात और सवेरे ब्रश करने ही चाहिए। इससे दाँतों में फँसे सभी अन्न-कण निकल जाएँगे; दाँतों में सड़न नहीं होगी। तुम्हें मसूड़ों की भी मालिश करनी चाहिए ताकि वे स्वस्थ और मज़बूत रहें।

चलो, हम दोनों फ़ोरहैन्स टूथपेस्ट से अपने दाँत ब्रश कर लें।

हाँ, डैडी!

फ़ोरहैन्स
-दाँतों के एक डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट।

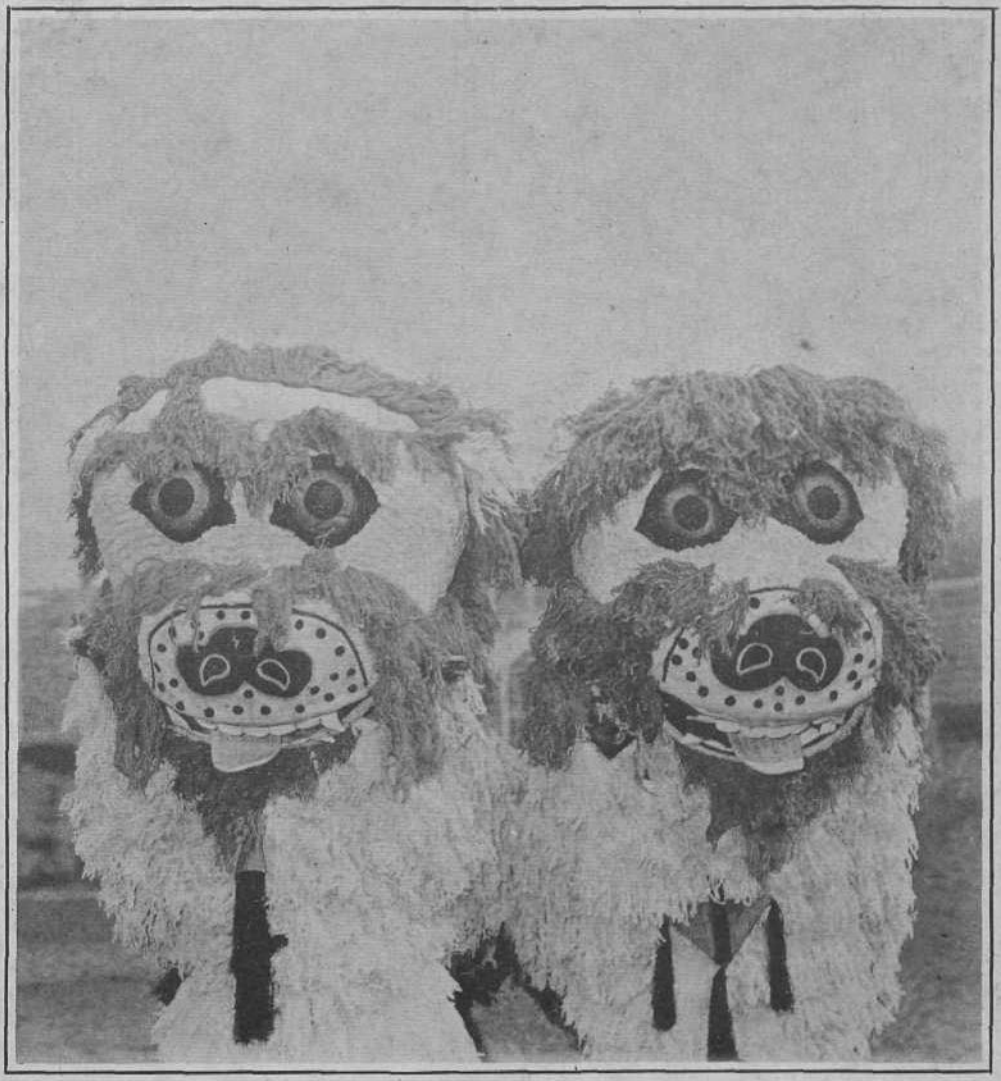

शिव-लीलाएँ